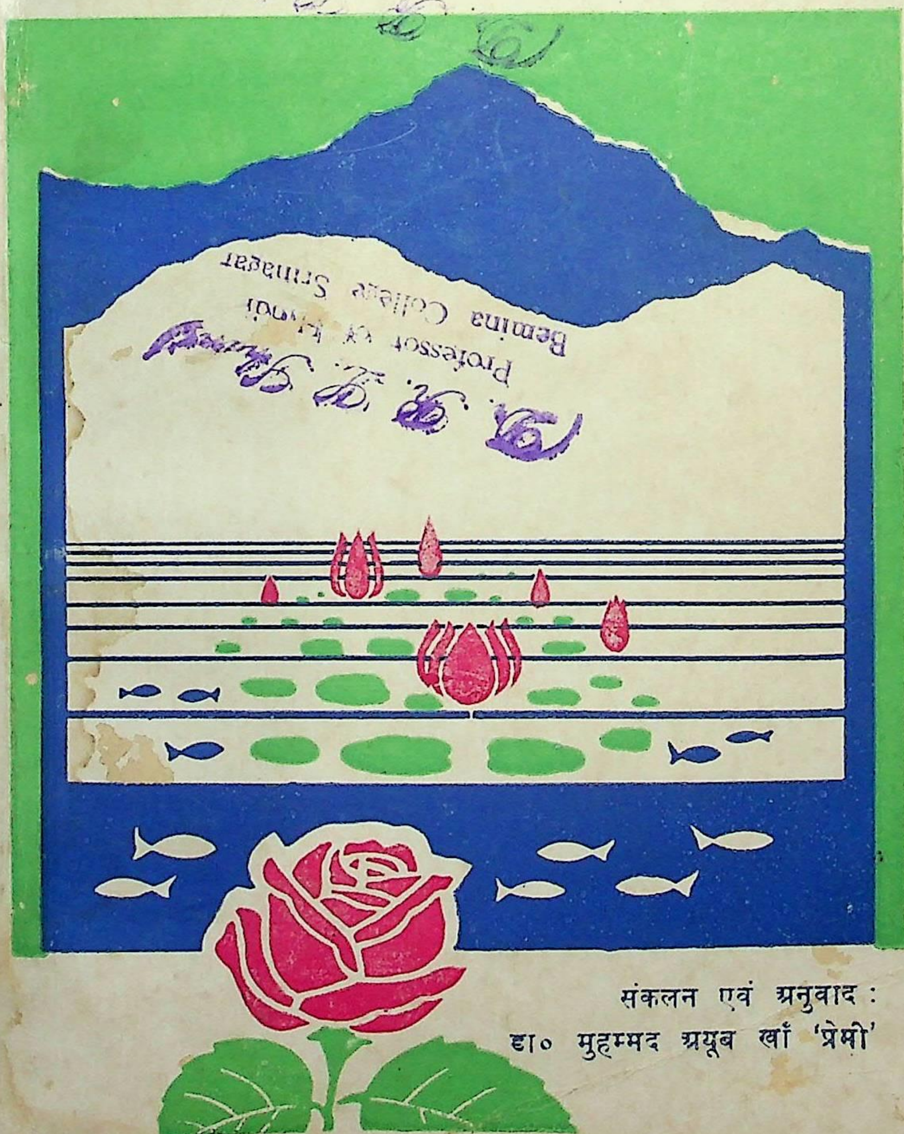
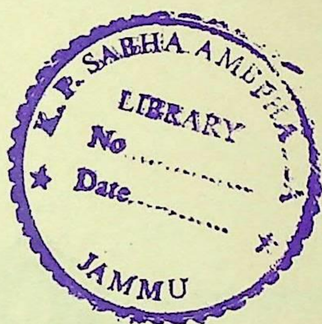
प्रतिनिधि कश्मीरी कविताएं



संकलन एवं अनुवाद :
डा० मुहम्मद अयूब खाँ 'प्रेमी'



प्रतिनिधि कश्मीरी कविताएं



संकलन एवं अनुवाद :

डॉ० मुहम्मद अयूब खाँ 'प्रेमी'

जे० एण्ड के० अकादमी आॅफ आर्ट कल्चर एण्ड लैंग्वेजिज़, जम्मू ।



जे० एण्ड के० अकादमी ऑफ आर्ट
कल्चर एण्ड लैंग्वेजिज़, जम्मू
द्वारा प्रकाशित

मूल्य :

प्रथम संस्करण : 1975

ओका प्रेस, लाल-चौक,
श्रीनगर में मुद्रित

वक्तव्य

कश्मीरी साहित्य अपनी विविधता एवं अनेकरूपता के लिए प्रख्यात है। कश्मीरी साहित्य का काव्य-पक्ष कितना समृद्ध है इसी की एक बानगी प्रस्तुत संकलन में दी गई है। संकलन में मूल कश्मीरी काव्य की आत्मा को समझते हुए तथा कहीं कहीं मूल छन्द की भी रक्षा करते हुए अनुवाद किया गया है। इस भाषा के साहित्य को हिन्दी पाठकों तक ले जाने के लिए जे० एण्ड० के० अकादमी ऑफ आर्ट, कल्चर एण्ड लैंग्वेजिज़ अपनी ओर से हर सम्भव प्रयास कर रही है। हमने कश्मीरी लोकगीतों, कश्मीरी कहानियों, कश्मीरी के सुप्रसिद्ध एवं सुप्रतिष्ठित कवियों की कृतियों को हिन्दी पाठकों तक पहुँचाया है और उन्होंने इन सब रचनाओं का पर्याप्त स्वागत किया है। सुप्रतिष्ठित विद्वान एवं प्रसिद्ध कवि डा० मुहम्मद अयूब खां "प्रेमी" साहब के इस प्रयास का भी हिन्दी जगत् मुक्त हृदय से स्वागत करेगा, इसी विश्वास के साथ हम यह संकलन आपको समर्पित कर रहे हैं।

रमेश महता
संपादक

जे० एण्ड० के० कल्चरल अकादमी, जम्मू
दिनांक ११-८-१९७५

अभिमत

कश्मीरी भाषा की समृद्ध काव्य-परम्परा से हिन्दी-पाठक का परिचय कराने के लिए डा० अयूब "प्रेमी" ने कश्मीरी की इक्यावन चुनी हुई कविताओं का पद्यात्मक रूपान्तर प्रस्तुत कर एक स्तुत्य प्रयास किया है। अनुवाद के माध्यम से मूल-भाषा, भाव-सौन्दर्य और अभिव्यंजना कौशल को यथावत् ग्रहण कर पाना कठिन ही होता है किन्तु डा० अयूब प्रेमी ने अपनी सहज सरल शैली से मूल के साथ न्याय करने का भरसक प्रयास किया है।

कश्मीरी भाषा का प्राचीन काव्य दर्शन के क्षेत्र में अद्वैतवाद और धर्म के क्षेत्र में सूफी प्रेमा भक्ति से अत्यधिक प्रभावित रहा है। धर्म और दर्शन की यह परम्परा, मध्ययुग में भारत की प्रायः सभी भाषाओं में समान रूप से लक्षित होती है। यदि तुलनात्मक दृष्टि से मध्ययुगीन भारतीय काव्य का विश्लेषण किया जाय तो यह तथ्य भारतीय भावात्मक एकता का पोषक ही सिद्ध होगा। डा० अयूब 'प्रेमी' ने अपनी पुस्तक के पूर्वकथन में इस पहलू पर सरसरी तौर पर विचार किया है। भक्ति काव्य के अनुशीलन से यही समता उजागर होती है।

कश्मीरी भाषा का आधुनिक काव्य राष्ट्रीयता और सांस्कृतिक एकता की भावना से ओतप्रोत है। आज़ाद और महजूर जैसे राष्ट्र चेतना के कवियों की वाणी ने राष्ट्रीय आन्दोलन को वाणी देने की सफल चेष्टा की है। वर्तमान-युग के प्रसिद्ध कवि दीनानाथ नादिम और राही की कविताएँ नवीन भाव-बोध और राष्ट्रीय चेतना से आप्लावित हैं। इनकी कविताओं में नवीन युगबोध के साथ अभिव्यक्ति में भी नूतनता लक्षित होती

है । फलतः इन इक्यावन कविताओं के माध्यम से पाठक कश्मीरी काव्य की आत्मा को समझ सकता है और भारतीय भावात्मक एकता को सुदृढ़ बनाने की दिशा में इनका उपयोग कर सकता है ।

डा० अयूब प्रेमी स्वयं हिन्दी के अच्छे कवि हैं । प्रांजल भाषा, छन्द और अभिव्यंजना सौष्ठव की दृष्टि से उनका यह पद्यात्मक प्रयास बहुत सफल बन पड़ा है । मैं उन्हें बधाई देता हूँ ।

डा० विजयेन्द्र स्नातक
प्रोफेसर तथा अध्यक्ष हिन्दी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ।

२६-६-७५

अनुक्रमणिका

पूर्वकथन

जिस प्रकार कश्मीरी भाषा का सम्बन्ध आर्य-भाषा-परिवार से है उसी प्रकार यहाँ के काव्य का मूलत: सम्बन्ध आर्य काव्य-परम्परा से माना जा सकता है। ईरान और भारत की भाषा और साहित्य में जो भी परम्परा परिलक्षित होती है उन दोनों का सुन्दर सामंजस्य कश्मीरी भाषा और साहित्य में देखने को मिलता है। भारत में हिन्दू-मुस्लिम संस्कृतियों का सुन्दर मिलन इसी आधार पर हुआ है। यह अब सर्वग्राह्य सत्य है कि कश्मीरी काव्य का कलेवर चाहे विदेशी प्रभाव से मिल कर बना हो लेकिन उस का आत्म-पक्ष विशुद्ध भारतीय चिंतन और अनुभूति से प्राणान्वित है। यहाँ भारत का अर्थ उन नवीन संस्कृतियों के मिश्रित रूप से सम्बद्ध है जिन्होंने समय समय पर धर्मों, दो जातियों को अद्वैत सम्बन्ध में ढाला है। इस दृष्टि से कश्मीर भारत का प्रतिनिधि बना रहा है। कभी कभी तो आश्चर्य चकित तथ्य देखने को मिलते हैं। जो विचार-धारा भारत में महान् कवियों के काव्य में अनुस्यूत रही है वही कश्मीर के समसामयिक कवियों के काव्य में समानान्तर बन कर प्रकट हुई है। प्राचीन युग में कश्मीर की घाटी शेष देश से अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण अलग-थलग होते हुए भी विचार-साम्य को अंकुरित करती रही है। इस तथ्य से यह स्पष्ट प्रमाण मिलता है कि यहाँ के निवासी मूलत: भारतीय दर्शन से प्रभावित हैं। शितिकंठ (सन् १२००-१३०० ई०) के "महानय प्रकाश" से लेकर अभिनव गुप्त के ग्रन्थों में चर्या-पदों की परम्परा उपलब्ध होती है उसकी तुलना नाथ-सिद्धों के चर्या-पदों से की जा सकती है। त्रिक्-दर्शन का अद्वैत रूप

ग्रौर नाथ-सिद्धों का ग्रद्वैत रूप मूल में एक ही ग्रथ रखत हैं। ग्रतः उत्तर भारत में जो प्राकृत का रूप प्रचलित था वही कश्मीर में भी परिलक्षित होता है ।

भाषा की दृष्टि से कश्मीरी को यदि एक स्वतंत्र प्राकृत से सम्बद्ध माना जाय तब भी किसी को ग्रापत्ति नहीं हो सकती शितिकंठ के महानय प्रकाश में जो कश्मीरी प्राकृत मिलती है वह संस्कृत भाषा के बहुत निकट है ग्रतः हिन्दी का पूर्वज रूप सा प्रतीत होती है । १

उसे भाव की दृष्टि से भी भारतीय माना जायगा । शितिकंठ के बाद महेश्वरानन्द के प्राकृत काव्य "महार्थ मंजरी" में एक पंक्ति ग्राधुनिक कश्मीरी भाषा से मिलती जुलती है—"ग्रकु ग्रकु पंचभूत पंचगुनो ।" विचार की दृष्टि से महार्थ मंजरी में ग्रद्वैतवाद की ही ग्रभिव्यंजना हुई है २ —

१. नित्य समाधाने डलवाने
चर्याचर्य कमे उक्किष्ट ।
लोकि लोकोत्तर वसवाने
एहु, कमथु, भर्जाव नय निष्ट

मीरी रूपान्तर :-
न्यथ समादानि अडलुवन्य
चर्या चर्यक कमि उक्किष्ट ।
लूकि लूकुत्तरि वसुवुन्य
यि हुम कमोथ वजिव नयनिह ॥

संस्कृत रूप :-
नित्य समाधानेन ग्रदोलयमानः
चर्याचर्य क्रमेण उत्कृष्टः,
लोके लोकोत्तरे च वसन्तः
इमे एक क्रमार्थं नयनिष्टः,

हिन्दी :-
नित्य समाधान से ग्रदोलयमान
चर्या चर्य क्रम से उत्कृष्ट (मन को)
लोक लोकोत्तर में बसते हुए इसी क्रम से
ग्रागे बढ़ा ।

२. ग्रप्पा खु वीस मूलं
तत्थ पमाणं ण कोवि ग्रथेई ।
कः स व होइ पियासा
गंगा सुतैणि मग्नरस

तुलना कीजिए—

काहेरी नलिनी तू कुम्हिलानी ।
तेरे ही नाल सरोवर पानी ॥
जल में मीन पियासी ।
मोहिं सुनि सुनि ग्रावत हाँसी ॥

"ईश्वर के जगत का आधार होने के लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है (क्योंकि) जो जल में डूबा हो उसे क्या प्यास रहती है ?"।

लल्लेश्वरी का युग महेश्वरानन्द के बाद ही आता है। वह सुल्तान शहाबुद्दीन (सन् १३५५-१३७४ ई०) के समकालीन मानी जाती हैं। लेकिन दीर्घायु होने के नाते लल्लेश्वरी कबीर की समसामयिक मानी जा सकती है। यह वह युग था जब सूफी संतों और भक्त कवियों ने भारत में साम्प्रदायिक आग को रोकने का सफल प्रयत्न किया था। भक्ति-आन्दोलन का प्रभाव कश्मीर में भी हुआ और साथ ही शेखनूरुद्दीन जैसे सूफियों ने जाति-पाँति, के भेद-भाव को समाप्त करने के लिए योग दिया। इन सन्तों का साधना-पथ है प्रेम और लक्ष्य है परम तत्व अर्थात् अद्वैत की प्राप्ति। इन्होंने अनुभूति के आधार पर ही काव्य की रचना की है। लल्लेश्वरी ने कबीर की भाँति ही भेदभाव को दूर करने की बात बड़े आत्म-विश्वास के साथ कही है—

यह अपना और पराया
मैंने एक सम सब जाना।

यह रात और वह दिन है
दोनों में भेद न माना॥

जिसके मन द्वैत नहीं है,
जो भेद-भाव से ऊपर।

देवों के गुरु को देखा,
भरपूर उसी ने भू-पर[१]॥

---

१. पर न पान यमि
समुय मोन
यमि हिन्दुय मोन
दूयन किन्हो राथ
यमि सय मने अद्वय सांपुन
तमी ड्यूठुय स्वर ग्वरनाथ॥

हिन्दी के मूलस्वर और लल्लेश्वरी के काव्य के मूल स्व में कोई भेद नहीं है । यहाँ तक कि उसकी भाषा में हिन्द के बीजांकुर ढूंढे जा सकते हैं । इसके प्रमाण में लल्लेश्वर के निम्न-उद्धृत वाक् के रेखांकित शब्दों पर विचार किया ज सकता है—

<u>गगन</u> चय <u>भूतल</u> चय
चय <u>द्यन</u> (दिन) <u>पवन</u> त <u>रात</u> ।
<u>अर्ग</u> (अर्घ) त <u>चन्दन</u> <u>पोश</u> (पुहुप, पुष्प) <u>पोन्य</u> (पानी) च
चय न <u>सोरुय</u> (सारी) लागिजि <u>क्याह</u> (क्या)

लल्लेश्वरी के बाद नुन्दऋषि अर्थात् शेख-नूरुद्दीन का काव आता है । वे एक साधक कवि थे । नुन्दऋषि भी मूल-भारती अद्वैत के आलोक से भास्वर हैं—

"वही था और रहेगा वही
जीवन उसी का रट ले नाम ।
वही स्वयं भ्रम दूर करेगा
जीव, चेतना से ले काम ।। १

शेखनूरुद्दीन के काव्य में भी आगर (आगार), क्रिय (क्रिया), शन्य (शून्य) स्वन (स्वर्ण), प्रज़ल्य (प्रज्ज्वलित), द्यन (दिन) तारक, जिहा (जिह्वा) कालस (कालका), राजहोंस (राजहंस) इत्यादि ऐसे शब्द हैं जो कश्मीर में हिन्दी को पल्लवित करने के लिए सहायक सिद्ध हुए हैं ।

शेख-नूरुद्दीन के पश्चात् जैनुल आबदीन (बडशाह) के शासन काल (सन् १४२१-१४७२) में भट्टावतार कृत वाणासुर बध-कथा खंड-काव्य मिलता है । इस से पूर्व प्रबन्ध-काव्य की परम्परा अवश्य रही होगी जो बुतशिकन सिकन्दर के समय में पुस्तकालयों के जलाने के कारण अवशिष्ट नहीं है । यही कारण हैं कि

१. सुय ओस तै सुइ ओस
सुय सुय करिं जिहा जुवो

शेखनूरुद्दीन के बाद कश्मीरी काव्य का कोई विशेष महत्वपूण ग्रन्थ नहीं मिलता । भट्टावतार के बाद कश्मीरी काव्य-जगत् में माधुर्य, भावना का सौकुमार्य और संगीत तत्व ले कर अवतरित हुई एक अप्सरा जिसे हब्बाखातून के नाम से जाना जाता है । हब्बाखातून कलामर्मज्ञ भावुक सुन्दरी थी जिसे देख कर सम्बन्धी ललचाकर भागे और तपस्वियों की तपस्या खंडित हुई—

बन के तपस्वी छोड़ बन आये ।
दौड़े सम्बन्धी सभी ललचाये १ ।।

यह भाव-चित्र मेनका और विश्वामित्र की पौराणिक कथा पर आधारित है । ऐसा ही पुष्प-धन्वा कामदेव का भावचित्र देखिये—

भागे आँख मिचौली कर के
मेरे मदन सुमन-प्रिय आओ । २

इसी मदन के भाव-चित्र वाले गीत ने महजूर के भावुक हृदय को प्रेरणा दी । हब्बा के काव्य में प्रगीत काव्य विकसित हुआ । उस में रागतत्व की प्रधानता कला के विषयीगत रूप (Subjectivity) से प्रभविष्णु बना है । उस के गीतों में व्यापक संवेदना है और है आत्माभिव्यक्ति की स्वप्निल और झिल-मिलाती अभिव्यंजना ।

ऐन्द्रिक बोध (Sensuousness) की प्रधानता के साथ यहाँ पर लाक्षणिक प्रयोगों की विविधता और प्रतीकों की नवीनता है—

पिघली हिम हूं ज्यों सावन में
खिली चमेली हूं मधुवन में
तुम्हारा मधुवन मेरे तन में
क्यों तुम मुझ से रूठ गये हो ३ ?

---

१. बन के तपऋषि तपः आय वस्य वस्य
दह दरि यामत लूसित गव ।।

२. चुलहमा रोशे रोशे
वुला म्याने पोशे मदनो

३. श्रावन्य शीन ज़न गलान आयस
वागन फुजिंस बोंन्ही
चोनुय बाग तै च़ वुलो छावान
च्य क़वो गइयों म्यान्य दी १

हब्बा-खातून ने अपने जीवन में उतार-चढ़ाव देखे हैं। शैशव पिता के सुख भरे आँगन में बीता, पति के यहाँ विषमताओं का सामना किया और तलाक़ पाने के बाद भाग्य ने कश्मीर सम्राट यूसुफ चक़ (सन् १४७२-१५५५ ई०) के महलों की महारानी बना दिया। अकबर की फौज़ों से परास्त होने और बन्दी बनाये जाने के बाद यूसुफ चक़ की यह प्रेयसी और चहेती मलिका विक्षिप्त सी इधर-उधर भटकती रही। उसके गीत जीवन की सम-विषम परिस्थितियों की करुण गाथा कहते हैं। कश्मीर का जन-मानस उन गीतों को गाते गाते रस-विभोर हो उठता है।

प्रेम और संगीत में अद्वैत सम्बन्ध है। इस संगीत के प्रभाव से हम एक दूसरे के निकट आकर परिचित नहीं होते अपितु आत्मिक रूप से एक हो जाते हैं। संगीत और काव्य उद्धारक हैं।१ शेक्सपियर ने संगीत की महिमा को समझा था :—

The man that hath no music in himself
Nor is moved with the cancord of sweet sounds
Is fit for treason.................. ।

संगीत और प्रेम दोनों ही रसात्मक हैं। रस अद्वैत स्थिति का व्यंजक है जहां भाव भाव से, भावना भावना से व्यक्ति व्यक्ति से और आत्मा आत्मा से मिल कर अद्वैत हो जाती है। अतः प्रेम की दीवानी हब्बा-खातून के गीत काल की अभेद्य दीवार तोड़ कर कश्मीर की सुन्दर घाटी में आज भी गूंजते सुनाई देते हैं। यहाँ का मस्त यौवन उन गीतों को रस मग्न रूप में दुहराता रहता है और सदैव दुहराता रहेगा।

---

१. तंत्री नाद कवित्तरस सरस राग रति रंग।
अन बूड़े बूड़े, तिरे जो बूड़े सब अंग॥

—बिहारी।

हव्वा-खातून के बाद एक बहुत बड़ा शून्य है। या तो हव्वा-खातून की लोकप्रियता के कारण कोई कवि जम नहीं पाया और या फिर आन्तरिक स्थिति डाँवाडोल रही हो। १७ वीं शताब्दी में साहिब कौल के दो ग्रन्थ मिलते हैं—"कृष्णावतार" और "जन्मचरित"। दोनों ही ग्रन्थ कला की दृष्टि से कोई विशेष महत्व के नहीं हैं। भाषा का जड़ रूप है। इन ग्रन्थों का केवल ऐतिहासिक अस्तित्व है। हाँ एक महत्व अवश्य है वह है कश्मीर में कृष्ण काव्य का प्रवर्तन। यद्यपि बाणासुर वध-कथा में कृष्ण एक पात्र के रूप में हैं तथापि भक्ति का रूप साहिब कौल के काव्य में ही प्रवर्तित हुआ है।

सत्रहवीं शताब्दी के अंत में अलकेश्वरी (रूपभवानी) और शाह कलन्दर का आध्यात्मिक द्वन्द्व बहुत प्रसिद्ध हुआ है। रूपभवानी कृष्ण-भक्ति भावना लेकर और शाह कलन्दर सूफीमत को लेकर अंत में अद्वैत भूमि पर मिल जाते हैं। रूपभवानी की कविता में हिन्दी के शब्दों का ही प्रयोग नहीं अपितु हिन्दी में उन्होंने पद भी लिखे हैं। मुग़लों के बाद पठानों के शासन-काल (सन् १७३९-१८१९ ई०) में प्रसिद्ध फारसी के कवि भवानीदास काचरू की पत्नी अरिन्यमाल ने फिर एक बार हव्वा-खातून की सी मधुरधारा प्रवाहित की। भवानीदास पठानों के राज्य-काल में उच्च-पदाधिकारी थे। उन के विरुद्ध षड्यंत्र रचा गया और उन्हें कारावास का कठिन दंड भोगना पड़ा। इसीलिए अरिन्यमाल के गीतों में विरह जनित करुण वेदना उमड़ पड़ी है—

खिली चमेली थी मैं सावन की
जुही का रंग हुआ करनी साजन की
प्रिय आकर कब दर्शन दोगे १?

अरिन्यमाल की कविता में उत्सर्ग की भावना है। प्रेम में बलिदान करने की तीव्र उत्कण्ठा है। पतिव्रता भारतीय नारी का आदर्श रूप है इसीलिए प्रतीक्षा करती हुई कवयित्री की मनुहार व्यापक सहानुभूति जाग्रत करती है जहां प्रेम में पूर्ण

१. आरन्य रंग गोम श्रा वनहिंये दक़र इ येशुं नि दिये।

विश्वास है—

अगर तुम आजाओ एक बार
गला काट कर करूं निछावर प्राण मेरे निस्सार
पैर पड़ूंगी आस न टूटे
दुख क्यों दिये रे बालम झूटे
मैं अबला मेरा प्यार न छूटे विनती करूं हजार
अगर तुम आजाओ एक बार १ ॥

अरिन्यमाल के बाद प्रकाशराम ने राम-भक्ति का प्रवर्तन किया। हिन्दी की राम-भक्ति का स्वर यहाँ पर भी महाकाव्य के रूप में प्रकट हुआ है। प्रकाशराम के गीत और उनकी "प्रकाश-रामायण" के छन्द हिन्दुओं के त्योहारों और उत्सवों पर गाये जाते हैं। प्रकाश राम के बाद परमानन्द नन्दराम ने कृष्ण-काव्य का सुन्दर रूप कश्मीरी साहित्य को दिया। उन की प्रसिद्ध रचनाएं हैं—"सुदामाचरित" राधा-स्वयंवर और कुछ फुट कर कविताएं। परमानन्द के काव्य में दार्शनिकता का अनुभूति परक रूप रहस्यवाद की सृष्टि करता है। परमानन्द कृष्ण और सुदामा में अद्वैत सम्बन्ध स्थापित कर देते हैं। "तब कौन सुदामा और कौन भगवान ?" दोनों अभिन्न हैं—

च्वपारय पानय ओस वछनय
सुदामा कुनिनत; ओस भगवानय।
भगवान ने लिया इथिनय भक्तनय
जय जय जय जय दीवकीनन्दन।

परमानन्द का सम-सामयिक कवि था वहाबखार। वह एक मस्त फकीर था। उस की भाषा में संस्कृत और फारसी शब्दों का सुन्दर सम्मिश्रण है। कहीं कहीं तो आध्यात्मिकता का स्वरूप शुद्ध भारतीय है। "एकोऽहं बहुस्याम" की भावना मूर्तिमती की गई है—

१. छम लादन अकिं लटि इयना
हरि कुय वन्द सै रथ।
रावि आदन प्यम सै पादन
लतिं कव थवनम लथ।

बहुत हुआ समय जब पिलाई थी मदिरा
न तब मिट्टी थी और न कुम्भकार
दैव ढूंढता था अपनी जय जयकार । १

अहद ज़रगर ने तो भक्ति में ही आस्था रखना शुरू कर दिया। उन में एक सच्चे सूफी के दर्शन हुए हैं। उन की भावना का केन्द्र सगुण ब्रह्म है—

प्रिय की जब से सुनी वाणी
तब से छोडा कलमा, पहना जुनार
छूट गया काबा मूर्तियों में फंसा दिल
दीन और ईमान की हुई लूटमार ॥ २

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में प्रसिद्ध सूफी महमूद गामी का उदय हुआ। महमूद गामी ने मसनवी शैली का प्रयोग किया है। काव्य की कथावस्तु फारसी है जैसे "लैला मजनू," "शीरीं-फरहाद" और किस्साए हारून रशीद। लेकिन विचारों की दृष्टि से वे भारतीय हैं। मिस्र के बादशाह हारून रशीद को अपने

. मयमनः चोपनपः तन गव इच काल
व्यलि नो ओस बूद मे च् न बियः काल
दय ओस छाडान पानः जय ।

ुलना कीजिए—

चिर समाधि में अचिर प्रकृति जब
तुम अनादि तब केवल तम ।
अपने ही सुख-इंगित से फिर
हुए तरंगित सृष्टि विषम ।

—निराला

अनामिका पृ० ३१।

. यनः बूज़ुम कनः तमिं हुन्द गुफ़्तारः
तनः त्रोवुम कलिमै पूरम ज़ुनार
छेनः कैबस हेनः आस बुतखानसः
लूट कुरनम दीनस त ईमानस ।

पुत्र अज़ीज़ की मृत्यु पर सन्यास और योग लेने का निश्चय ठेठ भारतीय है । यहाँ तक कि रेखांकित शब्दावली भी हिन्दी के निकट की मानी जा सकती है—

मिस्र के शाहजादाः
बसर के आजिज़ो
नूरः बारिथो चुल हम रोगितै ।
लागयो सन्यास
छांडात जोगितै ॥

महमूद गामी का बिम्ब-विधान उत्कृष्ट कोटिका है । नीचे उद्धृत मृत्यु के बिम्ब में जहाँ एक ओर करुण-भाव के यथार्थ रूप की पारदर्शी व्यंजना है तो दूसरी ओर आध्यात्मिकता का कलात्मक संकेत भी है—

रंगदार पखेरू बुलबुल ने,
जब पिंजड़ा अपना छोड़ दिया ।
मिट्टी का शरीर आवारा बना,
रंग छोड़ दिया, संग छोड़ दिया ॥ १

महमूद गामी ने श्रृंगार रस से ओत-प्रोत काव्य भी रचा है । उन के प्रेम को प्रखर रूप देने में "अज़मी" नाम की युवती का बहुत बड़ा हाथ रहा है । २ भावना के स्तर पर उनकी प्रेमिका का उद्गार विशुद्ध भारतीय संस्कृति के अनुकूल है—

चंदन लगा, भर चाँदी के थाल
छिपके चमेली खिली, खिले अनार
अप्सरा मैं, रे क्या हुआ प्यार ?
मिट गये मेरे सब अरमान ।
मदन मेरे मारो तुम वाण ॥ ३

१. पंजरः मंज याम रंग
बुल बुल चूरिंचुल ।
म्यचि अंबर आवार गव
ताम रंग डुल ॥

२. शांगस नौगाम वुन्य वत्यू प्रार
ऋज़मा दीदार हाव तम लो ।

३. चूरि चन्दुन मलुम रुपः दूरे
हिमः प्यठ दान पोश शूद्रान
इ क्याह गोम सुरगचि् हूरे
राव रोवथम शूरे पान ॥

रसूलमीर, स्वछिक्राल, कृष्णजू राजदान और मक़बूल शाह क्रालवारी की काव्य-रचनाओं से कश्मीरी काव्य और भी गौरवान्वित हुआ है। कृष्णजू राजदान ने कृष्ण काव्य को सरल भाषा और मधुर रूप में प्रस्तुत किया है। कृष्ण की बांसुरी सुनने के लिए गोपियों के कान आतुर हैं फिर प्रेमविह्वलता क्यों न हो—

बालकृष्ण छस प्रारान छाल: मारान इय: ना।
बंसरी छस कन व दारान, शब्द बूजित मलना ॥

यही मस्ती स्वछिक्राल के गीतों में है। यहाँ आध्यात्मिकता के साथ प्रेम की मस्ती है—

पूछा जब "बिन्दु कहाँ से आया?"
बोले—"प्रेम की राह से पाया।"
कहातब—"प्रेम का बिन्दु दिखाओ"
बोले—"रखोगे कहाँ बताओ।" १

रसूलमीर श्रृंगार रस के कवि हैं लेकिन उन के गीतों में सूफियों की सी मस्ती है मक़बूलशाह क्रालवारी ने मसनवी शैली में प्रबन्ध काव्य "गुलरेज" की रचना की है। वहाबपरे के काव्य में सुन्दर शब्द-चयन और शैली गठी हुई है। नीलकंठ शर्मा, विश्वम्भरनाथ कौल, पंडित ताराचन्द ने क्रमश: शर्मारामायण, विष्णु प्रताप रामायण और ताराचन्द रामायण की रचना की है।

अहमद बटवारी ने सूफी रहस्यवाद को काव्य का विषय बनाया है। एक स्थान पर उमर खय्याम का भी प्रभाव है—

मधुशाला में किसका निर्णय
मधुबाला के जब मधु प्याले।
कई हज़म कर सके न उनको
सिद्धों ने भर भर पी डाले ॥ २

---

१. दप्यो मस नोक्त ओसुसनत आव कति
तमि दोपनम पुरवत: सपदुस अश्क वतिं
दप्योमस नोक्त: अश्कुन बाव तम्यति।
नमिं दोपनमं बावयै थावक कति ॥

२. मैख़ान फ़ैसल द्युत कल वालय
कँचन मय च्यत क़ै समदान
आरिफव मारिफ़त च्यव सबज प्यालव
लालो इ कत्यू आलव गव ॥

कबीर ने जो झीनी झीनी चदरिया बुनी वैसी ही अहमद बटवारी ने भी बुनी है । यह प्रतीक बहुत ही सुन्दर रूप में प्रयुक्त हुआ है—

प्राण-चर्खे पर कात के तार ।
चिंतन वस्त्र किया तैय्यार ॥ १

अद्वैत की अनुभूति भी औपनिषदिक ढंग की है :—

बुय छुस मैखाना पैमानय
मैं मधुशाला मैं ही प्याला

मास्टर जिन्दा कौल, गुलाम रसूल नाज़की और प्रो० मुहीउद्दीन हाजिनी ने प्राय: प्रेम, धर्म और समाज परक कविताएं लिखी हैं । लेकिन बीसवीं शताब्दी में राष्ट्रीयता और क्रान्ति की उद्घोषणा अब्दुल आहद आज़ाद ने ही की है । यहाँ का प्रगतिशील आन्दोलन उत्तर भारत के शेष स्थानों से भिन्न होता हुआ भी भावना के स्तर पर समान है । आज़ाद युगान्तर कारी कवि हैं । उनका "शिकवै कश्मीर" लोक काव्य बन गया है । आज़ाद ने जनता की उमंगों और इच्छाओं को वाणी दी है । उन्होंने साम्प्रदायिकता पर प्रहार करते हुए हिन्दू-मुस्लिम एकता का संगीत छेड़ा है । गांधी, सुभाष, ललितादित्य और बडशाह पर उसने लेखनी चलाई है । आजाद दासता से मुक्त रहने और निरंतर प्रगतिशील बनने के लिए प्रेरित करते हैं—

दास नहीं हूँ बँध जाऊँ,
जंजीरों में हथ कड़ियों में
जीवन का संगीत मिला
पथ में मंजिल की घड़ियों में । २

---

१. दम: इन्द्रस तोस: म्य क्वतुये
गम सूतिन वोननय आव ॥

२. गुलाम: छुस न काह थाव्यम
म्य पंजरन होंकलन अन्दर
इवान छुम ज़िंदगी हुन्द सोज
सफरन मंजिलन अन्दर ॥

महजूर राष्ट्रीय कवि के रूप में ही अधिक प्रसिद्ध हैं। कश्मीर में राष्ट्रीय जागरण की चेतना से उनकी कविता स्पन्दित हो उठी है। इसी नवीनता के कारण यह कवि प्रगतिशील कहा जाता है। राष्ट्रीय चेतना का रूप विशुद्ध सांस्कृतिक आधार पर है। ऐसा लगता है जैसे श्रीमद्भागवत गीता की जरा-मरण से युक्त आत्मा की पुकार हो—

शरद में झर जाते सब फूल
बसंत में फिर जीवन का जोर।
मिला करता मर मर जीवन
मरण-भय छोड़ चलो इस ओर। १

जिस समय राष्ट्रीय आन्दोलन जोरों पर था उस समय ऐसा कौन सा व्यक्ति था जो "महजूर" के स्वर के साथ "समिथ वतन वतन परिव, तरानै वतन परिव" मिलकर नहीं गाता था घर बाज़ार सभी जगह यही स्वर गूँजा करते थे। लेकिन स्वतंत्रता के बाद जनतंन्त्र से उनका मोह-भंग हुआ। आरिफ ने इस तथ्य की व्यंजना इस प्रकार की है—

गरीबों को क्या क्राँति के फल से मतलब।
जहाँ एक दो चमके सूरज से जब तब।
जहाँ तारकों की सी समता नहीं है'
जहाँ देश, जनवाद विकसित नहीं जब। २

वर्तमान युग के कश्मीरी साहित्य में दीनानाथ नादिम का प्रमुख योगदान रहा है। "नादिम" भी प्रगति में आस्था रखते हैं लेकिन उनकी प्रगति पूर्व से आभासित प्रगति का रूप है—

---

१. गुलहरद. हरान होन्त:
बिय: दुबार: करान दोर।
मरि मॅर छ फेरान जिन्दगी
विसवास मरनुक त्राव

२. गरीवन ग्यूल क्या ? तमि इन्कलाबुक,
अकिसद्वन दरजि यमि द्युत आफ़ताबुक,
बराबर तारकन हन्दि पआठि यकसान,
यलि फुलि कोम चरिजर लबे हिसाबुक।

जो जनता के संग है वह आगे बढ़ा है ।
जो पिछड़ा, बिना लक्ष्य थक कर खड़ा है ॥ १

नादिम साहब ने कश्मीरीं साहित्य को एक नवीन दिश और नवीन विचार ही नहीं दिये अपितु नवीन शैली भी दी है शैली की दृष्टि से कवियों के घने वन में उनका व्यक्तित्व देवदा के सदृश है । नादिम के सहगामी रहमान राही भी प्रगतिवाद धारा में बहे हैं । वे शांति के नहीं अपितु क्राँति के समर्थक हैं-

दृष्टि वही जो हो असीम
हृदय वह जो उलझन में लीन

राही ने विचारों में ही क्रांति नहीं की बल्कि काव्य-रूप में भी एक नये शिल्प को जन्म दिया है । राही ने मुक्त छं का प्रवर्तन किया है । उनके काव्य में तुकवन्दी नहीं है फि भी आन्तरिक लय मौजूद है । जहाँ नादिम साहब केवल प्रगतिवा तक ही गये हैं वहाँ राही निरन्तर प्रगतिशील हैं । उन्होंने नयी कविता के आयाम को भी अपने काव्य में फैलाया है और बहु ही गहरी संवेदना के साथ युग-बोध परक कविताएं लिखी हैं अमीन कामिल, सजूद सैलानी, मक्खनलाल बेकस, गौहर, गुला नबी खयाल, चमनलाल चमन तथा वासुदेव रेह से अभी कश्मीर काव्य को बहुत कुछ मिलने की आशा है । मुझे विश्वास कि कश्मीर की भावी कविता में नवीन अभिव्यक्ति का माध्यम नया ढाँचा, नये छंद, नवीन भाव-बोध, नव युग-बोध, नवी प्रतीक, नवीन बिम्ब-विधान वर्तमान युग मानस की जड़ता को तोड़ने में समर्थ होंगे और कश्मीर की कविता शेष भारत की कविता-धारा के साथ ही निरंतर एक ही भूमि पर प्रवाहित होती जायगी ।

संक्षेप में उपर्युक्त अध्ययन का निष्कर्ष यही है कि कश्मीर की कविता भारतीय आत्मा से पृथक् रूप में अभिव्यंजना नहीं

१. अवामस सीऽधि यस गव म्युल सु ग्रौठ थोक ।
वदन युसरूद मन्जिलस वातनइ थोक ॥

करती है। यही कारण है यहाँ पर भावात्मक एकता की संरक्षा हो सकी है। यहाँ के लोग व्यापक दृष्टि से देखते हैं और मानवता के धरातल पर सोचते हैं। शितिकंठ से लेकर वर्तमान कवि को ऐसी ही स्वस्थ परम्परा मिली है। अतः भविष्य की कविता भी इसी परम्परा का अनुगमन करेगी। हिन्दी के पाठकों के लिए कश्मीरी कविता की आत्मा का आभास दिलाने के लिए इस प्रकार का प्रयास किया गया है। इस कार्य में मुझे श्री दीनानाथ नादिम और रहमान राही से लगातार परामर्श मिलता रहा है अतः उन के प्रति मैं अपना आभार प्रदर्शन करना कर्तव्य समझता हूँ।

डा० अयूब प्रेमी
१५-१२-७३

लल्लेश्वरी

वाक् (वाक्य)

कच्चे धागे से नैय्या,
कैसे हो सागर पार ।
सूचित हों देव हमारे,
हो सके मेरा निस्तार ॥१॥
यह अपना और पराया,
मैंने एक सम सब जाना ।
यह रात और वह दिन है,
दोनों में भेद न माना ।
जिसके मन द्वैत नहीं है,
जो भेद-भाव से ऊपर ।
देवों के गुरु को देखा,
भरपूर उसी ने भूपर ॥२॥
कर मूल स्रोत से गर्जन,
लघु सरिता सींचे क्यारी ।
उस ओर की कृपा से जग का,
सौभाग्य, क्यों याद बिसारी ॥३॥
लल्ला मैं प्रेम दिवानी,
खोजत दिन-रात गुजारे ।
है वही नक्षत्र शुभ घड़ी,
देखे घर पण्डित प्यारे ॥४॥
रे मूर्ख ज्ञान पाकर भी,
बन बहरा गूंगा जड़ ही ।
जैसे सुनता वैसे कह,
अभ्यास तत्वविद् काही ॥५॥
मन का सब मैल जलाया,
मारा है जिगर को मारा ।
तब लल्ला नाम कहाया,
जब दामन वहीं पसारा ॥६॥

नुन्द ऋषि

शुक (श्लोक)

ज्ञान का मूल शास्त्र का अर्थ,
क्रिया का मूल स्वल्प आहार ।
नास्ति का मूल स्वयं वह जाने,
जलधि का मूल अन्त से पार ।।१।।

प्रेम वही जो प्रेम से जलता,
स्वर्ण सदृश जल स्वयं प्रकाश ।
प्रेम की कसक हृदय में व्यापे
वही अनन्त के पहुँचा पास ।।२।।

अलग अलग गुज़ारे कहीं दिन
हर एक जगह को करके पार ।
अपना जीवन अपना जीवन,
ऐसे कर लेगा निस्तार ।।३।।

वही था और रहेगा वह ही,
जीव उसी का रट ले नाम ।
वही स्वयं भ्रम दूर करेगा,
जीव चेतना से ले काम ।।४।।

वह न देखता समय की निष्ठा,
वह न देखता हृदय का हाल ।
चिंतन मौन प्रभु का करले
राजहंस आये तत्काल ।।५।।

हब्बा खातून

गीत १

कलाई से खींच गिरेवाँ को थाम,
बेदर्दी ने तोड़ दिये मेरे हार ।।

बड़ी बृहस्पति को गई मैं चरार ।
किया नीलनाग में भी इंतज़ार
जिंदगी की शाम न आये यार
बेदर्दी ने तोड़ दिये मेरे हार ।।

यहाँ से गई मैं प्रीतम-द्वार
पहन कर गहने कर सिंगार
जिंदगी की शाम न आये यार
बेदर्दी ने तोड़ दिये मेरे हार ।।

गीत २

खेलने निकली खो गई धुन में
दौड़े सम्बन्धी एक ही क्षण में ।

बुरका पहन चली अंधेरे में
घिरी जगत् के घन घेरे में ।
बन के तपस्वी छोड़ बन आये
दौड़े सम्बन्धी सभी ललचाये ।।

मैके वाले मेरे धनी बड़ा काम ।
तभी हब्बाखातून है मेरा नाम ।
बन के तपस्वी छोड़ बन आये
दौड़े सम्बन्धी सभी ललचाये ।।

गीत ३

कौन सी सौत नें तुम्हें रिझाया
क्यों तुम मुझ से रूठ गये हो ?

गुस्सा और रूठना छोड़ो
प्यार का तार न मन से तोड़ो
क्या मन में कोई चाह न बोलो
क्यों तुम मुझ से रूठ गये हो ?

आधी रात मेरा खुला द्वार है
"आना पल भर" यह पुकार है
भेद न फिर क्यों भेद-भाव है ?
क्यों तुम मुझ से रूठ गये हो ?

पर्वत-पर्वत खोज के खोई
यौवन का दिन बीता रोई
व्यर्थ हैं व्यंजन रखे रसोई
क्यों तुम मुझ से रूठ गये हो ?

पिघली हिम हूँ ज्यों सावन में
खिली चमेली हूँ मधुवन में
तुम्हारा मधुवन मेरे तन में
क्यों तुम मुझ से रूठ गये हो ?

आदर नहीं नींद नहिं आती
मुझे वेदना यही सताती
किया न शीतल जलती छाती
क्यों तुम मुझ से रूठ गये हो ?

सद्यः स्नाता रूप सजाऊँ
शपथ तुम्हारी रोकर खाऊँ
भरी जवानी, तुम्हें बुलाऊँ
क्यों तुम पथ मेरा भूल गये हो ?

हव्वा मैं अरमान की मारी
बन्दगी कैसे करूं तुम्हारी
गई जवानी हा याद बेचारी
क्यों तुम मुझ से रूठ गये हो ?

गीत ४

भागे आँख-मिचौली करके
मेरे मदन सुमन-प्रिय आओ ।।

आओ मस्त चलें पनघट पर
दुनिया मस्त स्वप्न में पल भर
राह निहारूं क्या हो उत्तर
मेरे मदन सुमन-प्रिय आओ ।।

आओ मस्त कि देखें चमेली
मिले कमाई क्या अलबेली
जो भी मरी लौटी न सहेली
भागे आँख-मिचौली करके
मेरे मदन सुमन-प्रिय आओ ।।

आओ मस्त वनज देखें हम
मुझे भटकाया रहा न संयम
दैव का लिखा मिटायें क्या हम
भागे आँख-मिचौली करके
मेरे मदन सुमन-प्रिय आओ ।।

अग्निमाल

गीत १

खिली चमेली थी मैं सावन की
जुही का रंग अब करनी साजन की
प्रिय आकर कब दर्शन दोगे ?

शाल के किनारे मैं मोती सजाऊँ
भूले मन वाले तुम्हें भूल न पाऊँ
प्रिय आकर कब दर्शन दोगे ?

तुम्हें बुलाया चले छोड़ मिठाई
ग़ैर के सामने खिल्ली उड़ाई
प्रिय आकर कब दर्शन दोगे ?

सुन्दरियों ने हाँ व्यंग्य किये हैं
जली मैं गहरे घाव किये हैं
कौन कहेगा कब दर्शन दोगे ?
प्रिय आकर कब दर्शन दोगे ?

गीत २

अगर तुम आजाओ एक बार
गला काट कर करूं निछावर प्राण मेरे निस्सार ॥

पैर पडूँ मैं आस न टूटे
दुःख क्यों दिये रे बालम झूटे
मैं अबला मेरा प्यार न छूटे, विनती करूं हज़ार ।
अगर तुम आजाओ एक बार ॥
किस से कहूं सखि सौतें हंसतीं
बोले न साजन बातें कसकतीं
प्रिय बेदर्दी अखियाँ तरसतीं, सुनते नहीं पुकार ।
अगर तुभ आजाओ एक बार ॥

पिया की ग्रास रहे सुहाग है
ग्रौरों को चाहे ग्रौरों का भाग है
खुशी से मेरा यही त्याग है, मुझे सभी स्वीकार।
ग्रगर तुम ग्राजाग्रो एक बार ॥

गीत ३

जब से गये तुम लौटे न प्रीतम,
बाट जोहती बाल निहारे ।
जैसे ग्रपलक चाँद-सितारे ॥
रूप की विभा चहुं ग्रोर तुम्हारी
कभी राजा ग्रौर कभी भिखारी
बन में खोजती बाल निहारे ।
जैसे ग्रपलक चाँद-सितारे ॥
सखी करें क्या बैरिन हैं सब
सौतन मोहा क्या कह कर ग्रब
रोयें नहीं तो करें भी क्या तब
बुरा न माने बाल निहारे ।
जैसे ग्रपलक चाँद-सितारे ॥
जब से गये तुम लौटे न प्रीतम,
बाट जोहती बाल निहारे ।
जैसे ग्रपलक चाँद-सितारे ॥

स्वच्छिन्नकाल

पिया से बोली "यारी करें हम"
"इस में क्या ? " सुन बोले प्रियतम

बोली "तुम रंगते कपडे सुन्दर"
"माँगू रंगाई न" बोले सुन कर

पूछा—"रंगाई लेते" नहीं क्यों ?"
बोले—"फट फाड़के हाथ लगे क्यों ?"

पूछा जब "बिन्दु कहाँ से आया ?"
बोले—"प्रेम की राह से पाया"

कहा तब—"प्रेम का बिन्दु दिखाओ"
बोले—"रखोगे कहाँ बताओ ?"

पूछा जब "बिन्दु अर्चना है क्यों ?"
बोले "दस्तगीरी करनी है ज्यों"

पूछा जब "तुम हो अनन्त ईश्वर"
बोले—"मेरा वैभव उस से भी बढ़कर"

पूछा जब "पूजूँ तुम्हारा वैभव ?"
बोले—"मृग नयनों में सुरमा हो जब"

पूछा—क्या सुरमा लगाने से होता ?"
बोले—"सत्य-असत्य का ज्ञान है होता"

पूछा जब—"तुम्हारा कहाँ करार है ?"
बोले—"सुख दुख में वह फरार है"

पूछा—"तुम्हारा कहाँ है ग्रासन ?"
बोले—"जहाँ माया का निष्काषन"
पूछा कि तुम हो खुदा मैं बन्दा ।
बोले—"सभी सुनने वाले शर्मिदा ।
कहे स्कछि काल प्रेम बन्धनहीन है ।
देखो खुदाबन्दी चिर नवीन हैं ।।

महमूद गाम्नी

हारून रशीद का पुत्र-शोक

रंगदार पखेरू बुलबुल ने,
जब पिंजड़ा अपना छोड़ दिया ।
वह गया वहाँ उस ओर,
जगत् से मुखड़ा अपना मोड़ लिया ।
मिट्टी का शरीर आवारा बना,
रंग बिगड़ गया संग छोड़ दिया ।
ग्रो मिस्र के शहज़ादे ग्राग्रो,
ग्रो बसरा के आर्त दुखी आग्रो ।
मिट्टी के मजूर चले ग्राग्रो,
क्यों पिता से नाता तोड़ दिया ।
मां-बाप के ताजदार ग्राग्रो,
चल बसे कहाँ कुछ बतलाग्रो ।
पथ कोई नहीं बतलाता है,
जीवन में कैसा मोड़ दिया ।
रूप के सुन्दर चोरी से तुम,
चले गये, पथ बिसरा कर तुम ।
खोजते चला मैं जोगी बनकर,
सन्यास से मन को जोड़ दिया ।

गीत २

उपालम्भ तुम करने वाले
अरमानों को हरने वाले
भागे मुझ से चोरी चोरी
मैं बाला भोली सी गोरी
मदन मेरे मारो तुम बाण

मिट गये मेरे सब अरमान ।
आओ छुप कर गोद झुलाऊं
मदन मेरे मारो तुम वाण

मिट गये मेरे सब अरमान ॥
मेरे गँवार किधर गये तुम
थकित हुए ये दौड़ते कदम
रूठ गये छुप गये किधर तुम
मिट गये मेरे सब अरमान ।
मदन मेरे मारो तुम वाण ॥

भिड़ के डंक से गहरे घाव
लोग हंसे मुझ पर बेभाव
पूरा कब हो मिलन का चाव
मिट गये मेरे सब अरमान ।
मदन मेरे मारो तुम वाण ॥

कस्तूरी - कुंकुम में नहाई
प्राण समर्पित करने आई
काठ को पेटी छुप ना पाई
मिट गये मेरे सब अरमान ।
मदन मेरे मारो तुम वाण ॥

चन्दन लगा भर चाँदी के थाल
छिप के चमेली खिली खिले अनार
अप्सरा मैं क्या हुआ रे प्यार
मिट गये मेरे सब अरमान ।
मदन मेरे मारो तुम वाण ।।

दैव न नियति मेरो अनुकूल
कुछ न संजोया धूल ही धूल
दुःख में साध के चुभते शूल
मिट गये मेरे सब अरमान ।
मदन मेरे मारो तुम वाण ।।

वही बनाये बिगाडे हाल
वही कहाये प्रलय का काल
विरह ने आर्त किया बेहाल
मिट गये मेरे सब अरमान ।
मदन मेरे मारो तुम वाण ।।

पथ जोहूं डूरू वेरीनाग जहां
महमूद का है निवास वहाँ
दर्शन दिये चोरी से जहाँ
मिट गये मेरे सब अरमान ।
मदन मेरे मारो तुम वाण ।।

शुक्र ऋषि

गीत

संगीत गया जब कानों में
सुनाऊँ दुखी जीवन की कथा

आकाश औ, पृथ्वी सुने नहीं
सुनाऊँ दुखो जीवन की कथा

न दिन का बोध न युग का ज्ञान
सुनाऊँ दुखी जीवन की कथा

न संवत्सर न सृजन कहीं
चारों ओर बिखरा था समां
न शब्द स्फार न कोई मार्ग
सुनाऊँ दुखी जीवन की कथा

न कोई पुरुष न पवन का भास
खुश हुआ जब बन गये बाग
नहीं तब अनन्त कोई पदार्थ
सनाऊँ दुखी जीवन की कथा

रसूलभीर शाहबादी

गीत

न सह सकूँगी विरह तुम्हारा
मैं बाला मर जाऊँगी ।

क्या मैं करू अब सहूँ मैं कैसे
मैं बाला मर जाऊँगी ।।

किया दुखी फिर तेरे इस हठने
नाक क्या चाँदी की तलवार ।
कितने शेर मार डाले हैं
मैं बाला मर जाऊँगी ।।

प्रियतम द्वार पवित्र करो अब
चिरंजीव देवता रहें सब ।
बिना तुम्हारे फूल से सूखें
मैं बाला मर जाऊँगी ।।

नागिन सी जुल्फों ने जकड़ा
बस इतनी सी मेरी कहानी ।
क्या प्रायश्चित करूँ बताओ
मैं बाला मर जाऊँगी ।।

प्रेम - बाग के फूल घाव हैं
सरो के तरुवर मेरी आह हैं ।
अश्रु की जल-धारा ले आऊँ
मैं बाला मर जाऊँगी ।।

खुशबू में स्नान किये अब
नाजुक सी मैं एक चमेली
मेरे भ्रमर तुम मुझ को देखो
मैं बाला मर जाऊँगी ।।

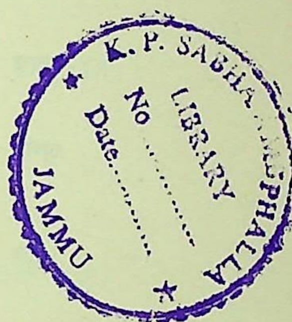
लज्जित किया सूर्य को मैंने
मैं चन्द्रिमा गान्धार देश की।
करके चिंतन थकी खड़ी हूँ,
मैं बाला मर जाऊँगी ।।

थर थराहटें गिरा रही हैं
सुन्दरता की बेल के सुमन ।
मन चंचल टिकता नहीं मेरा
मैं बाला मर जाऊँगी ।।

रूठे मुझ से दौड़ूँ पीछे
हाथ भी डालूँ गिरेबान में ।
दामन पकड़ूँ प्रलय के समय
मैं बाला मर जाऊँगी ।।

झुका मेरा कोमल शरीर भी
प्रेम - भार से वह बोझिल भी ।
कमर में पड़ी झुर्रियाँ मेरे
मैं बाला मर जाऊँगी ॥

खुलकर साफ अंधेरे में ही
बातें जौहरी ने कह डालीं ।
पत्थरों में रत्नों को खोजूँ
मैं बाला मर जाऊँगी ॥



सजधज कर मैं निकली घर से
खबर मिल सके कहीं कि जिससे ।
तुम्हारे पीछे पीछे मैं रोती
मैं बाला मर जाऊँगी ॥

नुकीली भौंहे तुम्हारी वेधें
अंग अंग में तीर भी मेरे ।
दिल मेरा छलनी कर डाला
मैं बाला मर जाऊँगी ॥

शरम की मारी दुख में मगन हूँ
कब जाना यह मैंने पल भर ।
आज भाग्य की ली है परीक्षा
मैं बाला मर जाऊँगी ॥

रसूलमीर पिसा है दुख में
बचन को नहीं भूल जाना प्रिय ।
प्रेम के रस से नयन भरूँगी
मैं बाला मर जाऊँगी ॥

मक़बूल शाह क्रालवारी

गुलरेज़

सुवह बुलबुलों ने,
किया जब कि शोर ।
जगा शांत होकर,
मैं निद्रा—विभोर ।।

फिर देखा चमन में,
न कोई सुमन है ।
कि बुलबुल भी गुमसुम,
यह सूना चमन है ।।

कली आरवल की,
यों मुरझा गई है ।
जला चन्द्रमुख या,
शमा जल गई है ।।

पवन जानते तुम,
कि मुझ को हुआ क्या ।
हृदय छलनी छलनी,
कि मुझ को हुआ क्या ।।

प्रकाशराम

राम-विवाह

मिली गीत गाने से शुद्ध वासना,
सीता चाहती श्याम रूप राम ।
ओंकार शब्द से आरम्भकर,
गाना शुरू किया माँ भवानी ने
सप्रेम सरस्वती विजया ने भी,
सीता चाहती श्याम रूपराम ।

साथ ली विजया ने सब देवियाँ,
पिंगला, मंगला शारदा साथ
माता शिवा ने फल शुभ दिया,
सीता चाहती श्याम रूप राम ।

* * *

हिंगला, मंगला, भद्रकाली आई,
हृदय-सरोवर भाव-कमल फूले
प्रेमेच्छा से राम को चढ़ाने आई,
सीता चाहती श्याम रूप राम ।
तपेश्वर, मुनीश्वर संग संग उसके,
तीनों को प्रेम से संग संग लाये
विष्णुमाया को हो नमस्कार,
सीता चाहती श्याम रूप राम ।
आगे पीछे देवियाँ और अप्सरायें,
गीत गाती अप्सरायें आगे आगे निकलीं
संगीत छेड़ती उन के पीछे देवियाँ,
सीता चाहती श्याम रूप राम ।

परमानन्द

श्री कृष्ण-स्तुति (सुदामा-चरित)

अंधेरे में तुम्हारा उजियाला जन्म हुआ
जय जय जय जय देवकी नन्दन ।

बन्दीगृह में जनमे पहुँच गये गोकुल
तुम्हारी लगन से मुक्त शायद हो जाऊँ
प्रार्थना मेरी सुन लेना प्रभु
जय जय जय जय देवकी नन्दन ।

हँसमुख संतान वसुदेव की तुम
उसे देख देख क्या होगी परीक्षा
नन्द गोपाल के इकलौते तुम
जय जय जय जय देवकी नन्दन ।

आतुर यमुना चरणों में करे प्रणाम
निष्पृह बाल गोपाल निष्काम
यह जल के ऊपर बढ़ने का कारण
जय जय जय जय देवकी नन्दन

मिरज़ काक

जगत् छोड़ नाम पकड़ कर,
बुला बुला कर उधर आमंत्रण ।
मैं जग ओम् दोनों जग बन कर,
ईश्वर जानो गोविंदजी भिन्न ।।

मैंने सोचा चीथड़े और चर्म लूँ पहन,
गुरु बोले क्या ऐसा पहले से है न ?
चिथड़ा है शरीर चर्म त्वचा है,
गोविन्द जी हैं राधा-कृष्ण ।।

चीथड़े-चर्म से मिलता नहीं ईश्वर,
साक्षी ज्ञानी सहस्रों मूर्ख नर ।
अज्ञान रजोगुण तमोगुण ने ढाँपा,
सोहम् सो भिन्न जानो ईश्वर ।।

ब्राह्मण वही जो ब्रह्म को जानें
ब्रह्म गायत्री सोहम् सो ।।

अब्दुल वहाब परे

गीत

छल किया तूने छलिये
यौवन मेरे ओह ! यौवन ।

ओ बेक़ाबू बे एतबार
यौवन मेरे ओह ! यौवन ।

कल देखो कैसी बहार थी ।
फूलों की खुशबू बेशुमार थी ।
अब जो गुल थे खार ही खार
यौवन मेरे ओह ! यौवन !

तू तो एक बड़ा दरिया
लेकर चला पहाड़ बहा ।
अब तो बगूले उठते हैं
यौवन मेरे ओह ! यौवन !

देवदारु ओ जंगल के
चीरा है तुमको आरीने ।
चूर चूर रे खूब किया
यौवन मेरे ओह ! यौवन !

वहाब खार

गीत

सुन दर्दीले साज़ का मर्म
खुदा जाने फिर क्या हुआ ?

कलमा ने किया तकरार
तभी में भूल गया गुफ्तार ।
जुबाँ कट कर लहूलुहान
खुदा जाने फिर क्या हुआ ?

करे पागल मजनूं भी क्या
जब अपने घर बैठी लैला ।
चुनरिया लाल और कमख्वाब
भले ही पहने हुए हों आप ।
नग्न क्या शीत से हो बेज़ार
खुदा जाने फिर क्या हुआ ?

छाया और शिकार का
मदिरा और खुमार का ।
पेट बिगडे तो क्या माने ।
खुदा जाने फिर क्या हुआ ?

कमान पर चढा कर तीर
शिकारी बनते हैं वे वीर ।
अंध को कमान औ क्या तीर
खुदा जाने फिर क्या हुआ ?

अब्दुल वहाब खार शार
कहे "घर में रहता यार"
कहा क्यों "कल था हमारे द्वार"
खुदा जाने फिर क्या हुआ ?

अहमद बटवारि

गीत

मृग नयनी का जिया लुभाया
पक्षियों की सुमधुर ध्वनि-माया ।
प्यारे यहाँ मुझे बतलाओ
कहाँ से आई ऐसी पुकार ॥

ठगने का तो भेद खुले तब
स्वयं छले जाओगे तुम जब ।
प्यारे यहाँ मुझे बतलाओ
कहाँ से आई ऐसी पुकार ॥

मधुशाला में किस का निर्णय
मधुबाला के जव मधु प्याले ।
कई हज़म कर सकें न उन को
सिद्धों ने भर भर पी डाले ।
प्यारे यहाँ मुझे बतलाओ
कहाँ से आई ऐसी पुकार ॥

यहाँ से गया तो वहाँ हुई ध्वनि
अहमद और जलायेंगे क्या ।
चन्दन रोज़ जलाते जाये,
लकड़ी और जलायेंगे क्या,
प्यारे यहाँ मुझे बतलाओ
कहाँ से आई ऐसी पुकार ॥

मुहम्मद बाज़ा

गीत

आओ प्रिय प्राणों से भी प्रिय
गोदी में तुम्ह झुलाऊँगी ।

चाँदी की जाली वजती है
हिंडोला बोले रुन झुन रुन झुन ।
महकते चंदन का है प्रिय
गोदी में तुम्हें झुलाऊँगी ॥

किसे कहूँ क्या मुझे हुआ
सावन में चमेली होना पड़ा ।
प्रिय तपन करूँगी सहन सभी
गोदी में तुम्हें झुलाऊंगी ॥

यह सौदा मैंने कैसा किया
जहाँ मूल में घाटा सहना पड़ा ।
घाटे में क्या दूँ तुम को प्रिय
गोदी में तुम्हें झुलाऊँगी ॥

आओ सुहाग मेरे प्रियतम
मैं गीत सुनाऊँगी तुमको ।
चिथडे भी हुए काले अब तो
गोदी में तुम्हें झुलाऊँगी ।।

ओ बेल पै चमके गुलाब तुम
किस चमन में खिले हुए हो कहाँ।
कांटों पै प्रतीक्षा में हूँ इधर
गोदी में तुम्हें झुलाऊँगी ।।

मजनू ने क़ब्र खोदी अपनी
लैला तो क़ब्र में पहले पड़ी ।
आओ लैला के मजनू अब
गोदी में तुम्हें झुलाऊँगी ।।

डल झील के प्यारे कमल मेरे
किस घर में चमके महके हो
घर सूना बडे डल में है पड़ा
गोदी में तुम्हें झुलाऊँगी ।।

शाहबाज अयाज़ की कहानी
वाजा महमूद की ज़ुबानी ।
शाहनामा पढूंगी मेरे प्रिय
गोदी में तुम्हें झुलाऊँगी ।।

कृष्णजू राज़दान

गणेश—वन्दना

ओंकार रूप से अधिकारवान्
मूलाधार का मैं धरूं ध्यान।
सिद्धि-दाता हो विघ्न-हर्ता
महागणपति तुम्हारा धरूँ ध्यान ।।

सब से पहले तुम्हारी बार
तप हो यज्ञ हो या सहाकार ।
व्यक्त रूप हो वेद ओंकार
महागणपति तुम्हारा धरूं ध्यान ॥

आदि शक्ति के तुम अधिकार
एक दंत तुम्हारा विस्तार ।
शिवजी के प्यारे विघ्न-हर्ता
महागणपति तुम्हारा धरूं ध्यान ॥

अब्दुल आहद आज़ाद

(१)

कश्मीर का शिकवा

ज़माना करता क्या गरदिश
नहीं आराम क़रार नहीं ।
बनाता बहार को पतझर
बने पतझर बहार कहीं ॥

कोई करता खेती बाड़ी
कि कोई फल इसका हरता ।
कोई खाता खिलाता है
कि स्वामी का निर्वाह नहीं ॥

किसी ने महल बनाये हैं
रंग-सामान सजाये हैं ।
कोई लेता मज़ा उनका
करे कोई संहार यहीं ॥

यह गरदिश हैं विधान यहाँ
पूनमी चाँद उन्तिसवाँ ।
न ऐसी उन्नति का विश्वास
पतन पर भी अधिकार नहीं ॥

आरवल

(२)

बताग्रो ग्रारवल[1] मुझ को तुम्हें क्या है परेशानी ?
किया क्या जादू गुलिलाला ने करके तेरी बदनामी ?

नखों में लाल मेंहदी झलकी जुल्फों से पशेमानी[2] ?
चुनरिया धो गई शबनम केश किसने गूँथे रानी ?

नदी के पत्थरों से प्रेम सुमन नित ग्राहें भरते हैं।
जवानी के नशे में तुम, न प्रेमी धन पर मरते हैं।।
धनी देखे ग़रीव होते भिखारी होते हैं दानी ।
बताग्रो ग्रारवल मुझ को तुम्हें क्या है परेशानी ?

तुम्हारी ये खिली कलियाँ दिये जलते दीपावलियाँ
हृदय के ज़ख्म ही तो हैं तुम्हारी ये खिली कलियाँ।
किसी बेदर्द का ग्राघात कैसी बात ग्रनजानी
बताग्रो ग्रारवल मुझ को तुम्हें क्या है परेशानी

प्रेम का किस पर रंग नहीं बदलते ऋषि विद्वान् सभी
काम के इस प्रताप से ही लाल होते हैं काले कभी।
प्रेम समता का दर्शन है यहाँ क्या ज्ञानी ग्रज्ञानी
बताग्रो ग्रारवल मुझ को तुम्हें क्या है परेशानी ?

फूट कर वही प्रेम की पीर तुम्हारे वस्त्रों को भी चीर
छुपा क्या ऐसे वन में है कोई ज़ालिम बड़ा बे पीर।
बताग्रो फिर किसने तुम को दिलाई है परेशानी ?
बताग्रो ग्रारवल मुझ को तुम्हें क्या है परेशानी ?

---

१. नदी-झरनों के किनारे उगे हुए जंगली गुलाब   २. पश्चाता

किसी के प्रेम में अलमस्त तू उस पर वार जाती है
नज़र आता नहीं कुछ भी कि किस से हार जाती है
शमा कब से जलाये हूँ तेरा यह कैसा सैलानी
बताओ आरवल मुझ को तुम्हें क्या है परेशानी

चाँद तुम ने सजाया है कि दिन सज कर बिताया है
पवन के मस्त झौंकों में उषा ने तुम को पाया है
हेम-वन में करतीं क्या तुम री ग्वालिन बन के दीवानी
बताओ आरवल मुझ को तुम्हें क्या है परेशानी ?

वन्य नद ला रहे होंगे स्रोत की ख़बर तुम्हारे लिए
कहो तो कोई कहता नहीं तुम्हारे या कि हमारे लिए।
भाग्य में लिखा हुआ है क्या यही तो हैं बस हैरानी
बताओ आरवल मुझ को तुम्हें क्या है परेशानी ?

विषैले कीड़े काटेंगे चलेंगे हवा के झौंके भी
न छोड़ो प्यार फिर भी तुम झेल जीवन में धोके भी।
समर्पित प्रिय पर होना तुम प्रेम-पथ में बन बलिदानी
बताओ आरवल मुझ को तुम्हें क्या है परेशानी ?

समझती फूल जिन्हें वे ख़ार मिले फिर कैसे तुझे क़रार ?
हृदय में बुलबुल के अरमान छोड़ कर चमन हुआ है फ़रार
बताओ कहाँ गया वह कहाँ ? कि इस में किसकी शैतानी ?
बताओ आरवल मुझ को तुम्हें क्या है परेशानी ?

तुम्हारे माथे का जो स्वर्ण बताओ अब वह गया कहाँ ?
यह कैसा आया है संकट भटकती बन में यहाँ वहाँ ?
ज्ञान की तू मशाल बन कर चमकती रही है कल्याणी
बताओ आरवल मुझ को तुम्हें क्या है परेशानी ?

प्रसाधन सुन्दरता के तुझे रोज़ मिलते हैं नये नये
अनुपमा बन कर शोभित हो दिप रहे आकर्षण के दिये।
काम ने लाल वस्त्र पहना सजाया तुम्हें ओ महारानी
बताओ आरवल मुझ को तुम्हें क्या है परेशानी ।

शील सौन्दर्य तुम्हारा वही कि खुश प्रिय जिस में प्यारा रहे
हृदय के मधु उपवन में भी विलास नवीन तुम्हारा रहे।
रहे जीवन संतुष्ट सदा पुष्प-लतिका ओ मस्तानी
बताओ आरवल मुझ को तुम्हें क्या है परेशानी ?

बहुत समझाया रे "आज़ाद" वफा सुन्दर शरीर में कहाँ ?
सचाई सुन्दर मन में बसी सचाई अधीर मन में कहाँ ?
समय पर कर सके नहिं कुछ अब करोगे तो नादानी
बताओ आरवल मुझ को तुम्हें क्या है परेशानी ?

गुलाम अहमद महजूर

(१)

राष्ट्रीय गीत

फूलों से कहती बुलबुल
मधुवन वतन हमारा।
है वतन हमारा मधुवन
मधुवन वतन हमारा ॥

रंगदार इस चमन में
खामोश खिल गये सुमन।
सब ओर महक उनकी
मधुवन वतन हमारा ॥

इन पर्वतों के बीच में
बसती रहीं बहारें।
शालमार में ही फूल क्या
मधुवन वतन हमारा ॥

फुलवारियों में फूल हैं
बागों बनों चमन में।
चाह बुलबुलों की बढ़ती
मधुवन वतन हमारा ॥

कोमल ये वन कुसुम हैं
निकले जगह की खोज में ।
कलियों ने जामे[1] खोले
मधुवन वतन हमारा ॥

चश्मों नदी नालों में
नाली व निर्झरों में ।
संगीत है बहार का
मधुवन वतन हमारा ॥

चहुँ ओर श्वेत भूधर
दीवार संगे मरमर ।
हरियाली है या गौहर[2]
मधुवन वतन हमारा ॥

ये प्रेम के मैदान सब
हरे भरे सुनसान हैं ।
जहाँ जी उठे मरा हुआ
मधुवन वतन हमारा ॥

सिन्धु में तन-मन धोकर
मानसबल अर्पित होकर ।
हर मुख से देखता खुद
मधुवन वतन हमारा ॥

महजूर देश अपना
सुन्दर चमन है सुन्दर ।
तुम प्यार इसका भरलो
मधवन वतन हमारा ।

---

१. कपड़े २. रत्न

(१)

ग़ज़ल

चल रेमाली नयी मधुऋतु की
तू अब शान पैदाकर ।
खिलेंगे फूल बुलबुल
मस्त हो सामान पैदाकर ।।

चमन वीरान शबनम रोये
फूलों में परेशानी ।
तू इन फूलों, बुलबुलों में
नयी एक जान पैदाकर ।।

रे बुलबुल कौन देगा मुक्ति
पिंजरे में क्यों रोता है ?
तू अपने आप अपनी मुश्किलें
आसान क्यों ना कर ।।

चहकते चमन में पंछी
नहीं आवाज उनकी एक ।
मेरे ईश्वर उन्हीं में एक स्वर
एक तान पैदा कर ।।

अगर तू गुल की बस्ती को
जगाये, छोड़ दे तब ऐश ।
उठा भूकम्प, मचा आँधी
गरज तूफान पैदा कर ।।

किये पैदा अनेकों फूल
कविता में अरे महजूर ।
रंगीले मधुवनों में
बुलबुलों के गान पैदाकर ।।

(३)

बुलबुल की फरियाद

नयी बोली नया संगीत नया सामान
दिखाता चला आता हुआ
नया यह राग सुनकर बागवान
हुआ है मस्त वह बेखुद हुआ ।

नयी बोली नये इस जोशने
मानव को बेसुध कर दिया
फिर बागवान को बुलबुलों की
रह सकी पहचान कब

सीखीं नयी अब बोलियाँ
मैंने भी नवयुग देखकर ।
मैं क्या करूँ मैं क्या करूँ
इस रूप अपने नाम को

इन को छुपा सकता नहीं ।
मेरे चमन में घुस पड़ी
ये बिल्लियाँ गिद्ध और बाज़
फूल फिर से गर खिलेंगे

बुलबुलें देखेंगी उन को
मौन गूँगे से जगत् को ।

चोरी चोरी चुपके चुपके
फल लुटेंगे सब तरफ फिर
सब फूल लुटते जायेंगे ।
आपसी झगड़ों में लड़ते

बाज़ ऊपर बिल्ली नीचे
मेरी जां को ताकते हैं ।

फूलों वाली टहनियों में
और कब तक मैं बचाऊँ ।

जान अपनी जान अपनी
तिनके सूखी पत्तियाँ भी

घोंसले के वास्ते एकत्र करना
सहन तक उनको नहीं है ।

नौंच कर उसको ढहा देते वहीं
ऊँचे ऊँचे से चिनारों पर

बना कर घोंसले वे रह रहे हैं
है वतन मेरा मगर

मैं छुप के लज्जित रह रहा हूँ
चोरी चोरी दिन गुज़ारूँ

कंटीली झाड़ियों में छुप रहा हूँ
और मेरा बाग़वान भी मौन है

बर्बादी मेरी देखता है
बुलबुल सुनो महजूर की

आवाज़ मुझको कह रही कुछ
शायद जवाब मिलेगा कुछ

गर सुने मेरा बागवान
नई बोली नया संगीत नया सामान

रसा जाविदानी

गीत

मधुमास के आये हैं दिन
बहार ही बहार है ।
आलस्य कर दो दूर तुम
बहार ही बहार है ।।

सौन्दर्य गूँथने लगा
गजरे चम्पा-गुलाब के ।
हर प्रेम में नया जोश है
बहार ही बहार है ।।

बादाम ने हलके गुलाबी
पहने जामे नवरोज़ के ।
परियों का शौक़ लिबास में
बहार ही बहार है ।।

मधुमास के आये हैं दिन
बहार ही बहार है ।।

मास्टर ज़िंदाकौल

योरकुन

शहर हमारा है बेकार ।
रहने के योग्य नहीं अब यार ।।

लूट और लालच है संग ।
इधर ग़रीब मरा हो तंग ।।

भागता है आता भी नहीं ।
नाव से करो उसपार कहीं ॥

मकड़ी के जाले के ही समान ।
चीरते निर्धन को धनवान ॥

शासक से उनको नहीं भय ॥
पूछ - ताछ का नहीं संशय ॥

धन का बल क्या सहारा नहीं ।
नाव से करो उस पार कहीं ॥

मानव बन मानव मजदूर ।
धर्म है दुर्बलता, कर दूर ॥

दूसरों के तुम भवन बनाते ।
क्यों न उन्हीं से काम कराते ?

उठाओ गधों का बोझ नहीं ।
नाव से करो उस पार कहीं ॥

ईश्वर बहुत कठोर प्रबल ।
पूजा उसकी है एक छल ॥

बस प्रसन्न करते जुबान से ।
गड़बड़ डाले न इस गुमान से ॥

सोना-टोना क्या बचाव नहीं ?
नाव से करो उस पार कहीं ॥

ऋषि और संत दिखाओ क्या ?
कब के मरे अब लाओगे क्या ?

आत्मा बिना उसका शरीर है ।
मस्तों की जगह वहाँ मन्दिर है ॥

पंडित मुल्ला भटकायें कहीं ।
नाव से करो उसपार कहीं ॥

सिद्ध - साधु पशु बने हैं सुन्दर ।
हमारी आशा पर ये-निर्भर ॥

लूट मार करते हैं हम सब ।
अंडे बच्चे मारते हैं अब ॥

ऊन मिले बिन घाव नहीं ।
नाव से करो उस पार कहीं ॥

अमर चन्द वली

ग़जल

घाव भी भर रहे हैं दाग़दारों के
बाग में बिखर गये हैं ज्योति-कण बहारों के
अच्छ-पुष्पों की किरणों की है दीवाली
मुक्ताहारों पर विभा बिखरी है निराली
मदिरा की गागरें भी भर रही मधुशाला
मद्यपों को घूँट घूँट पिलाई गई हाला
आग राग की उठी हुआ मैं रक्त-वेश
वालयार हुआ प्रतीक्षा में तेरी निःशेष
आँखों से बहने को रुधिर क्योंकि पिघला जिगर
इधर झरनों की लयों का पराग बन कर रहा झर
घावों के बौर खिले हैं दिल है बहार अब
क्या मानूँ इस समय निशात - शालमार अब
मैं तो दुख-मग्न "वली" हो गया हूँ आवारा
प्रेम की आग में कामना को राख कर डाला

समदमीर

गीत

जब से तूने ओ मतवाली
पिलाई भर भर सुरा की प्याली।
तब से मेरे सीने में ही
धधक रही है आग ।।

विस्मृत कर चेतना हमारी
छोड़ मुझे तुम दूर सिधारीं।
तब से मेरे सीने में ही
धधक रही है आग ।।

किसे चाहती प्रेम की तितली
जले प्राण निर्दय तू निकली।
जिस पर मन से अर्पित होगी
मेरी सी हालत उसकी होगी ।।
तब से मेरे सीने में ही
धधक रही है आग ।।

धारासार ये अश्रु बहाये
जीवन भर विरही कहलाये।
पार जलधि से पार करे क्या
मारे कहीं उस पार मिले क्या ?
तब से मेरे सीने में ही
धधक रही है आग ।।

युवा कपोती तुम हो सुन्दर
टूटे पक्ष वाला हूँ कबूतर
कठिन बेबसी क़ैद की होती
बीने कौन हार के मोती ?
तब से मेरे सीने में ही
धधक रही है आग ।

मदन से विनता यही हमारी
स्रष्टा बनो न बनो संहारी ।
रोऊँ रोने का समां नहीं है
मर जाऊँ पंछी मेरा नहीं है ।
तव से मेरे सीने में ही
धधक रही है आग ॥

छोड़ा सुख के सर्प ने डस के
तोड़ा वचन उफ़! सुन्दर मुख से ।
कहूँ क्या अब कुछ और किसी से
भाग्य नहीं अनुकूल तभी से
तब से मेरे सीने में ही
धधक रही है आग ॥

अहद जरगर

मुझे कर दिया है बेक़रार ।
पागल मस्त हो या बेदार ॥

किस से मिलन हुआ हरवार ।
पागल मस्त हो या बेदार ॥

अब तो दो मुझ को दीदार ।
दिल से दूर न दिल के ख़ार ॥

दिल में खिल जाता गुलज़ार ।
पागल मस्त हो या बेदार ॥

भौंहें तुम्हारी मेहराबदार ।
रोमावलि सुन्दर आकार ॥

स्वेद-कणों से हैं नमदार ।
पागल मस्त हो या बेदार ॥

नयन के प्याले हैं सरशार ।
नयनों में है भरा खुमार ।।

पिला शराब मेरे दरबार ।
पागल मस्त हो या बेदार ।।

नाक तुम्हारी है तलवार ।
पागल खूनी बेदर्द यार ।।

दीनी पढ़ते हैं सीपार ।
मागल मस्त हो या बेदार ।।

अधर तुम्हारे मधु के सार ।
ज्वर हर लेते एक ही बार ।।

वाणी तुम्हारो है दुर्निवार ।
पागल मस्त हो या बेदार ।।

शशि-मुख मधुर औ चमकदार ।
मानो खिला हो एक अनार ।।

उपमा नहिं कोई साकार ।
पागल मस्त हो या बेदार ।।

जुल्फें नागिन सी साकार ।
लचकीली पागल ख़मदार ।।

जैसे सांप हो या कुलमार ।
पागल मस्त हो या बेदार ।।

तेरे नाज़ों के खरीदार ।
कितने पागल हैं बेशुमार ।।

उन के राज़ के तुम ख़बरदार ।
पागल मस्त हो या बेदार ।।

मैं भी तेरा उम्मीदवार ।
साये में अपने रख हरबार ।।

निकला हूँ अब सरे बाज़ार ।
पागल मस्त हो या बेदार ॥

अहद ज़रगर के तुम यार ।
पागल वन जाओ रखवार ॥

करो भाग्य उसको होशियार ।
पागल मस्त हो या बेदार ॥

मीर गुलाम रसूल नाज़की

रुबाइयाँ

पर्वतों और जंगलों में थक गये हैं पैर मेरे
रोते रोते नयन से ही अश्रु-धारा बह रही है।
पानी घिसकर पत्थरों को 'नीलवट" देता बना
पर उसी संगीन दिल पर आह बे-असर हो रही है ॥१॥

देख तुम को चननि[1] फूलों का भी रंग फीका हुआ
कलियों का दिल तंग है माथे पै डाली जब शिकन।
यह चमकता रूप घावों पर नमक छिड़का गया
अधर पर मुस्कान लादो घाव पर लग जाये मरहम ॥२॥

पूर्णिमा के चाँद में झलका रूप का साया
कत्र जो अक्स दिल में उतरा निकल नहिं पाया।
दायें-बायें रह गई हैं पार्श्व की माया
आखें तो साथ साथ चलीं लौटा नहीं पाया ॥३॥

खुदा छोड़ कर धन की बंदगी की जिसने
भाई और दोस्त के दिल को ठेस दी जिसने ।

---

१. आड़्के फूल जो गुलाबी और लाल होते है ।

उसकी ग्राँखों से खुदा ने रोशनी छीनी
सीधे-सादे बेसहारों को छला जिसने ।।४।।

दीनानाथ नादिम

(१)

गीत

प्रेम मेरे क्या याद नहीं है तुम को वह दिन ।
चुपके चुपके खेल रहा था हमारा यौवन ।।

दूर दूर से जब हम दोनों देख रहे थे
कल की तैयारी करते हम मस्त रहे थे

निर्धनता ने संकट डाला शिशिर बनाया सुन्दर सावन ।
प्रेम मेरे क्या याद नहीं है तुमको वह दिन ।।

नन्हीलता अब बहार में ही पत्ता-पत्ता गिर रही है
दीप मेरी दीवार पै जलता लौ कुछ यादें दिला रही है

(ग्रास्था मेरी नहीं टूटती चाहे घिर ग्रायें सब कारण) ।
प्रेम मेरे क्या याद नहीं है तुमको वह दिन ।।

ग्रंधकार का नाश करे दीपक प्रकाश भी
प्रकाश-रेखा ने ही ग्रब तक रखी ग्राश भी

बढ़ता गया काफला ग्रमार का ज्यों मेरा यौवन ।
लगा फूलने ग्रमार ग्रपना नव वसंत का वही जागरण ।।

लिया गुलालों ने खिल कर स्थान तुम्हारा
मधुर समीर बसंती है उच्छ्वास तुम्हारा

नव-युग और तुम्हारी है यह प्यारी शुभ-किरण ।
प्रेम मेरे क्या याद नहीं है तुमको वह दिन ॥

---

(२)

प्रभात का समय

वह ध्रुवतारा देखो अकेला अकेला
बढ़ा कारवां भूल, तारों का मेला ।

बेचारा इधर का उधर रह गया है
साथी कहाँ ? खोजते थक गया है ।

गुलालों ने देखा, दाग सीने में पाया
शबनम बना गोद में फिर छुपाया ।

ज़मीं की दुआ बाग में उतर आया
शाखों में दुगनी कलियाँ खिला आया ।

नभ का अकेला अनेक हो गया है
अकड़ छोड़ रलमिल एक हो गया है ॥

सुमन में सुमन ओस में मोती बन कर
पता स्वर्ग का बस चमन के ही अन्दर ।

जो जनता के संग है वह आगे बढ़ा है
जो पिछड़ा, बिना लक्ष्य थक कर खड़ा है ।

---

(३)

एक शाम, १५ अगस्त १९६७

सारा आसपास यह बच्चों की चहकार भरा है
किलकारियाँ यहाँ वहाँ भागमभागी दौड़ धूप है

सभी जगह कोलाहल और हर तरफ चहल पहल हैं
एक पवन के झौंके ने बच्चों की हंसी उड़ाकर पागल सा बस बना दिया

और सफेदे हँस हँस करके देखो दोहरे हुए जा रहे
"वेदज़ार" कानाफूँसी में बहुत व्यस्त हैं

धीरे धीरे करें ठिठोली आपस में वे
और पेड़-पौदे न ज़मीं पर पाँव धर रहे

पगला "सर्वेंरवाँ" उचक कर चोटी गगन की छुए जा रहा
लता चमेली मुग्धा होकर ताना-बाना बुने जा रही

अट्टहास भर कर चिनार के पत्ते हँसते चले जा रहे
थर थर कम्पित बेल अंगूर की उछल कूद भी मचा रही है

टेढ़ा-मेढ़ा पेड़ शहतूत का अब उन्मुक्त हुआ जाता है
"ब्रिमिज" का पेड़ खिल खिलाकर हंस पड़ा अचानक

फूट पड़ा यौवन अनार का अनायास ही
सभी जगह कोलाहल और हर तरफ हलचल

एक पवन के भौंके ने बच्चों की हँसी उड़ाकर पागल सा बस बना दि
आह ! मैंने भी बच्चों की अभिलाषा की और पाला पोसा

लगा लगा कर गले उन्हें और गा-गाकर के मधुर लोरियाँ
अपने प्रेमिल सीने के उस सहज पसीने से सींचा था

जन्म के बाद मैंने उनको ममता भी दी थी
शिशिर में उनको सीने की गर्मी भी दी थी

गर्मी के मोसम में उनको शबनम सी साँसें प्रदान की
खुले हृदय से प्यार और स्नेह से सींचा

चुन चुन कर उनको सुन्दर से नाम दिये थे
वह नीली आँखों का उसे "समानता" नाम दे दिया

यह जो भूरे वालों वाला इसका "सत्य" नाम रख दिया
और सांवले रंग वाले को सदा "शुद्धता" कहके पुकारा

गोरे रंग वाले का मैंने नामकरण "सादगी" किया था
जो पुत्री गुड़िया समान थी उसे "देशधन" नाम दे दिया

और सुनहली बेटी को "भरपूर परिश्रम" कहके पुकारा
वन मैना को उचित "सभ्यता" नाम दे दिया

मेरे मानस के ये थे अरमान अधखिले
नहीं कभी ये पनप सके, ताज़ा हो पाये

क्यों न खेलते फिर ये हँसते नहीं अरे क्यों ?
दौड़ धूप भागमभागी ये खेल कूद क्यों नहीं कर रहे ?

ईश्वर जाने इनको किसकी नज़र लग गई
वीस वर्ष के वाद भी आज ज्यों के त्यों गुमसुम गुमसुम हैं

नहीं चल रही साँस न कोई कोलाहल है
लेकिन आसपास अब भी तो बच्चों की चहकार भरा है

मिर्ज़ा आरिफ़

रुबाइयाँ

गुलामों का दिल क्या ? इरादों का मरघट ।
वह मीठी जुबां, भाव-रेती का जमघट ।
जले कोयलों में जब चिंगारी पड़ती,
तो जलते महल सब चिताओं से चटपट ।।

*   *   *

गरीबों को गोलीं लगीं बार बार ।
उसे आज़ादी में भी रोटी है दुश्वार ।
रज़ामन्द भेड़ों की मानिन्द कटने को,
न बदले क़साई के दस्तूर हर बार ॥

*   *   *

गरीबों को क्या क्रांति के फल से मतलब ?
जहाँ एक दो चमके सूरज से जब तब ।
जहाँ तारकों की सी समता नहीं है,
जहाँ देश जनवाद विकसित नहीं जब ?

*   *   *

सियासी दोस्ती बस कागज़ की नाव है ।
अक्षरों का पाठ निज अस्तित्व भाव है ।
बढ़ना आगे और बढ़ने की करो सूरत,
युग-लहर के संग स्वार्थी का बहाव है ।

---

(१)

अहरबल

अहरबल का यह प्रपात है ।
प्रलय की दौड़ ज्यों वज्रपात है ॥

कभी पर्वत से छलाँग मारे ।
कभी पद ऊपर सर नीचे मारे ॥

धीरे धीरे चलना न जाना ।
ठहर के आराम करना न जाना ॥

विजलियाँ गर्जन और आग हैं ।
चोर यहाँ और बद दिमाग़ हैं ॥

पहाड़ी फूलों की बहार है ।
रुचिर वनस्थली बेशुमार है ॥

घने घनों का मधुर भार है ।
मधुर अग्नि का सुख-स्फार है ॥

कभी मधुर कभी ऊबड़ खाबड़ ।
पागल सा कभी बौड़म बागड़ ॥

रात-दिन तूफाँ धूप या छाया ।
इसने कुछ आराम न पाया ॥

चाँद-सूरज और कभी सितारे ।
क्रांति जगत् की कोई पुकारे ॥

कटु-मधु-ऋजु-टेढ़ा हो उत्तर ।
जो हो नहीं उत्सुकता क्षण भर ॥

तलवे आग से भरे भले हों ।
पग में छाले हरे भले हों ॥

रंग रंगीले रुचिर हार हैं ।
मोती उनके लिए तैयार हैं ॥

जल का घोर अछोर नाद है ।
शब्द निकम्मे दृष्टि-बाध है ॥

गुलाम नबी आरिज़

(१)

ग़ज़ल

मानव तुम आलीशान
अपना स्वत्व जताओ ।

ज़ंजीर तोड़ कर अरे
पुरुषत्व दिखाओ ।।

है वीर वह जो सीने पर
सब बिजलियाँ सहता ।।

कायर जो वायु के अनुकूल
नाव ले बहता ।।

सुन्दर आरवल झोंके से
होते हैं अति अधीर ।।

पर देवदारु को सदा
सजदा करे समीर ।।

बुलबुल उड़ादे धज्जियाँ
फरसूदा निज़ाम की ।।

स्वप्निल पुष्पों से राज़
कह, कागा ने उड़ान की ।।

---

(२)

मज़दूर

अपमानों की निद्रा से तू
आज जाग मजदूर
जाग मज़दूर ॥

कब तक रहेगा रे आवारा
आज जाग मज़दूर
जाग मज़दूर ॥

पूँजीपति ने खून पिया है
अब तक दबकर मौन जिया है।
अपने चरण दबा इन से तू
आज जाग मज़दूर ॥

प्रजातंत्र का खुरपा लेकर
उपवन की क्यारी में श्रम कर ।
देर न कर उठ संभल ज़रा तू
आज जाग मज़दूर
जाग मज़दूर ॥

छोड़ दासता निज जीवन में
कर उद्योग मुक्ति के क्षण में।
भगा सभी दारिद्र्य-दासता
जाग आज मज़दूर
जाग मज़दूर ॥

पथ-निर्देशक अपना बनकर
छोड़ सादगी सपना तज कर।
जकड़ेगी सादगी तुझे फिर
आज जाग मज़दूर
जाग मज़दूर ॥

भ्रम भय जो कि तुम्हारे दिल में
टोने का जो असर है दिल में

जादूगर तेरे पीछे है
आज जाग मज़दूर
जाग मज़दूर ॥

मदिरालय जो मस्त बनाता
वही क्रांति का घर कहलाता।
ऊँच-नीच का समस्तर तू
आज जाग मज़दूर
जाग मज़दूर ॥

फिर न जन्म लेंगे पैग़म्बर
जो पथ के बनते हैं रहबर
निश्चय वे अवतार न होंगे
आज जाग मज़दूर
जाग मज़दूर ॥

जितनी देर अन्य पर निर्भर
उतनी देर में मुश्किल हलकर।
खुद मुख़्तार बनेगा तब फिर
आज जाग मज़दूर
जाग मज़दूर ॥

खुले हृदय से कहता हूँ मैं
घूस न देना कहता हूँ मैं।
तुझे बना देगी अफ़साना
आज जाग मज़दूर
जाग मज़दूर ॥

घर के लोगों में बेज़ारी
पिता जी करते मेरी ख्वारी।
फिर भी निकला तेरे लिये मैं
आज जाग मज़दूर
जाग मज़दूर ॥

गुलाम नबी फिराक़

सुबह

सितारों को किसी के आगमन का जब हुआ आभास
सन्न से वे रह गये थे जब हुआ आभास

आसमां ने झीना प्यारा रेशमी पहना लिबास
रात ने पलकों को हलका कर जगाया प्राणियों को

जब नहाने को चले दौड़े गाँव के सब आबशार[1]
तब नयी ग़ज़लें शुरू की बुलबुलों ने ले सितार

नींद से बस जाग संगरमाल ने पहने ज़री के पैरहन
मोतियों से भरी टोकरियाँ लिये आई है शबनम

बाग के अन्दर उन्हें चारों तरफ छितरा दिया है
और कलियों ने निडर हो भर लिये हैं अपने दामन

ताज़ा ताज़ा फिर हवा ने खुशबू मली अपने बदन
हर तरफ़ खुशबू की लहरें दौड़तीं महके चमन

सूर्य को इस सदरख्वनि[2] में झाँकने का चाव हैं
सजके पर्वत के पीछे चढ़कर देखनें का भाव है

प्रकृति का यह रूप सुन्दर देखकर दिल खो गया है
काश अरमानों का ऐसा प्रातः आये भाग्य को क्या होगया है ।।

---

१. झरना । २. डलझील के पीछे का भाग

अमीन कामिल

कल कहाँ जाओगे ?

जो निकलूँ धूप में तो सीने में भरे ताप
जो बैठूँ साये में तो जमे देह में रक्त-चाप
न राहत दे सका कोई भी मौसम हाय अपने आप
कहो बेचैन दिल तुम वह समय कैसे बिताओगे ?

* * *

जब सितारे दीपकों को ही बुझायेंगे यहाँ पर
जब पथिक रतौंध में बेबस निहारेंगे यहाँ पर
दिन में खोजेंगे भटक कर कुछ टटोलेंगे यहाँ पर
जब लता को वायु बहला कर कर दे किस्सा पाक भी

रंग खोजायेंगे और सुगन्ध होगी खाक भी
लहर ज्वार उठायेंगीं नभ पीछे क़दम उठायेगा
प्रलय होगी प्यार की बातें नहीं होंगी वहाँ पर
कहो बेचैन दिल तुम वह समय कैसे बिताओगे ?

* * *

मित्र होगा अजनबी सा और अनजाना
न कोई पास होगा धैर्य देने चाहे घबराना
न कोई घाव सहलाये न मरहम ही लगायेगा
गहोगे पद्य को तो हाथ से सब छन्द छुट जायें

करोगे तुम पुकार तो कंठ में कांटे से से चुभ जायें
समय वह गर्भिणी की प्रसव-पीड़ा सा दुखद होगा
भीड़ के घोर जमघट में हर व्यक्ति जुदा होगा
सभी होंगे स्वतंत्र पथिक न निर्देशक कोई होगा

दिग्भ्रमित और आवारा हर एक चरण होगा
सूरज कुछ हाथों की दूरी पर ही चमकता होगा
ठिठुरता शीत कुछ हाथ दूर सब को जकड़ता होगा
धधकती आग या यह प्रेम आज से सह सकोगे तुम
कहो बेचैन दिल तुम कल कहाँ जाओगे? जाओगे?

रहमान राही

(१)

वही रात सुन्दर क्षण वही है वही यौवन का खुमार
देखा करता जब कि जीवन पूनमी चाँद फूलों की वहार

प्रेम का सागर जिस में आशायें होती तरलित और तरंगित
जो काठिन्य-बोध को काटा करती रहती थी नित

और चाहती थीं मिट जायें सभी विवशता के घेराव
यौवन जब था उषा-काल-संध्या का उष्णाता अलाव

कौन से रुख और कौन रंग में मानव देखे सूक्ष्म भाव
पूछूँ क्या तारकों से शायद भूल न पाये हों वह चाव

आशा भरे उन दो दिलों का प्रेम - पागल - इज़्तराब[1]
डल-झील आज भी शायद उन केशों की थरथराहट से हर्षित

पवन भी शायद वही संदेशा देने दौड़ता आया त्वरित
दूर से देखो कितनी भोली बुलबुल और कसकते हैं क्षण

मस्त तुम्हारी मधुर अमोल वाणी का करती जैसे अनुकरण
वेद भी तो झुक गये दिखाकर अपना ऊँचा सा आकार

चाँद सोचता चाँद सा तन क्यों हुआ मेरा है दाग़दार[2]
प्रातः भी तो हँसने लगा है यह सब कुछ इसके अनुकूल
क्योंकि तुम्हारी तिरछी भौंहों से झरने लगे सुकोमल फूल

---

१. घबराहट। २. धब्बेवाला।

(२)

मैं सोच में खो जाता हूँ

तुम अब भूल गई होंगी वह प्यारा आलम[1]
चैत्रमास का दिन जाने वह कहाँ मिला था
ताप-उष्णता में प्रातः से वृद्धि हुई थी
जब कि वायु का आँचल मानो किसी ने खींचा
व्यग्र स्वयं पिंजड़े की सांकल खोली मैंने
छतों के ऊपर वाष्प नींद से जाग गई थी
अबाबील विद्युत - स्तम्भ पर बैठी गाती
तुम अब भूल गई होंगी वह प्यारा आलम।

*　　　　*　　　　*

धुले वस्त्र डालने दिखाई दीं तुम ऊपर
धूप की गर्मी में फ्यरन ज्यादा ही लाल था
तुम्हारी आँखों में पढ़ली मेरे नयनों नें ग़ज़ल
कि ऐसी जिस के मर्म-ज्ञान को उम्र भी कम है
तुम्हारे सीने के अन्दर क्वांरा उभार वह
उमँगी लहरों बीच हंसिनी का उल्लास है
उँगली मुख में तनिक बांकपन से भौंहों में ख़म
इशारों में इलहाम होंठ पर मादक मुद्रा-विभ्रम
लगा कि चारों ओर उछलते हिरन स्वप्न के
तुम अब भूल गई होंगी वह प्यारा आलम।

*　　　　*　　　　*

क्षण क्षण में बदला करता है सरिता का जल
अब तो तुम गृहिणीं सागर सी रूप-अचंचल

---

१. दुनिया या संसार।

केन्द्र तुम्हारे भावों का होगा नन्हा मुख
फूले जैसे गुलिलाला आंगन में तुम्हारे
खुदा हिफ़ाजत करे सुहाग की सदा तुम्हारे
युग बीता है, मेरे भी तो बच्चे प्यारे
सुलझाऊँ रेशम-धागों में उलझे जीवन-चरण बिचारे
तुम अब भूल गई होंगीं वह प्यारा आलम ।

*   *   *

अब तो हृदय कक्ष में केवल कभी कभी बस
करे शरारत शिशु सा कोई पवन-का झौंका
जब पिंजड़ें से गिर जाती है ठंडी सांकल
सोचा करता याद तुम्हें भी आता होगा
वही चैत्र का धूप-दिवस और छींट का फ्यरन
तुम अब भूल गई होंगीं वह प्यारा आलम ।

---

(३)

एक छवि एक बिम्ब

उस के शरीर और प्राण भूखे और प्यासे थे
थूँथनी झुकाये मिट्टी पानी पत्थरों, काँटों को सूँघ रहा था
उस की दुम ढलती हवा का मिज़ाज पहचान रही थी

*   *   *

नंगी सड़क पर उसने धूप झेली
आँखों में लाल डोरे उभर आये
मुँह के बाल तपती धूल से अँट गये
कूचे कूचे की सीलन को खुरच लिया
नालियों और मोरियों ने उसे अन्दर का सारा हाल बता दिया

कहीं से च़ च़ च़ च़······आवाज़ आई तो उचक कर लपका
कहीं से पत्थर आया तो जबड़े बड़बड़ाने लगे
पानी के चश्मे पर से किसी को अहसास दिलाये बिना
ताज़ा पानी पीके आया

कसाई की दुकान के पास गंदे छिछड़ों पर
अपने ही नामी थूथनीवालों से लड़ा मार काट·····।

वह जीतकर पति-पत्नी की तरह चल पड़े
और वह रगें तानकर आँखें फेर फेर कर देखता रह गया
और आख़िर फिर से थूथनी घसीटने लगा
जो कुछ मिला भर लिया पेट में

मुआफ़िक ना मुआफिक
(अल्लम गल्लम)

बद परहेज़ी

* * *

सुबह जब मुहल्ले के बच्चे घरों में से निकल आये
शेरे को देखा, नाली के आर-पार करबट के बल लम्बीतान
मरा पड़ा था पेट जैसे उसकी आँखों में फटा पड़ा था
और पाँपी कै कर रही थी

सिर्फ वही सड़क के किनारे हल्का होकर बैठा था
जिसका अभी तक किसी ने कोई नाम ही नहीं रखा था
मैंने उनसे कहा-यह रातभर कुनकुना रहा था
तुमने नहीं सुना ?

बच्चे बिदक उठे

वह थूथनी लम्बी करके अपनी ही दुम में सिरे को काटने
की कोशिश में

चक्कर काट रहा था .
शायद उसे कलीलीं कुरेद रही थीं ।

महीउद्दीन निवाज़ रत्नपुरी

गीत (बिजली)

छाया में देखा यह क्या
आँखों में चमका यह क्या ।
कौन देश से आई बैरिन
और यहाँ मचली
अरी यह रोष भरी बिजली ॥

बादल छोड़ा कौन कामना ?
किधर चली है कौन भावना ?
कौन देश से आई बैरिन
और यहाँ मचली
अरी यह रोष भरी बिजली ॥

मेघों के पहने यह फहरन
सुन्दर मस्त चाल में थिरकन
स्वर्ग-अप्सरा पिया मिलन को
बस पाताल चली
अरी यह रोष भरी बिजली ॥

दूर दूर छिप कर प्रकाश कर
अभिसारिका मैं एक निडर
कर मत पर्दाफाश राज का
पौ फटते ही ढली
अरी यह रोश भरी बिजली ॥

मक्खनलाल बेकस

सलीब

रात भयानक बीत गई सब
नभ फूला अरुणोंदय में अब

धूप सुबह की हुई तीव्रतर
इधर भर रहा फुंकारें पर—

यह खूनी यह घातक अजगर
धूल चतुर्दिश रेत के शोले

सड़क गर्म फौलाद बगूले
पैर में अगणित पड़े फफोले

पथ बढ़ता कठिनतर होता जाता
आसमान पर खुदा है गाफिल

शेषनाग के साये में तन्द्रिल
निद्रा-मग्न मस्त है अविकल

सागर-मन्थन करें दूसरे
मगर देवता अमृत पायी

वही गरुण और थच्य जानवर
चौंच मारता नौंच काटता

आसमान पर खुदा हँस रहा
धूप तीव्रतर लपट के शोले

फुंकारें भी मार रहा ज़हरीला अजगर
मुझे सांस लेने की फुर्सत रही न पल भर

पथ बढ़ता कठिनतर होता जाता
जल्दी पहुँचूँ मैं भी तो किसी मुक़ाम पर
टूटे कंधे ढोते ढोते सलीब को अब ।

मुहीउद्दीन गौहर

सियाह तनाव

कानों ने पायलों की "छन - छन" सी सुनी
रेगिस्तान, तुम्हें किस ओर दृष्टि है
अभी पागल मजनू ने फिर सजदा किया

मेरी जवानी की क्यारी में क्या बुलबुल है
(जो) गीत गाये
भोर का तारा प्रकट होते ही व्याख्या करे
(कि) शबनम मोती बने

गले में रस्सी डालकर लटकायी गई
लकड़ियों की गठरी समेत
रात्रि का (आदन) अजब है
(सच्चाई के वक्षस्थल में खूँटियाँ ठूँसी जाती हैं)

उस प्रेमी ने मुझसे प्रण किया
जवानी ही नहीं
यह आकाश-पाताल के स्थल - स्थल पर लिखा हुआ है
"अगर तुम मुझे बुलाओगे, मैं भी तुम्हें याद करूँगा"

उस "मदनवार" को देखते (नयनों का) प्रकाश गया
भेड़ियों ने कैसे विश्वास किया
क्या करें

आज मैं "मोबलाइल" की मोटाई

(तथा) डीज़ल के धुएँ के नीचे आ गया हूँ
मुझे भी तो लकड़ियों की गठरी शायद उठानी है
मुझे भी तो रात का नाम शायद दिया जाय
मेरे गले में भी "तनाव" शायद डाला जाय।

चमनलाल चमन

प्रकाश

मुझे समझ में नही आता, मैं भटक गया हूँ
मैं किसकी ओर देखूँ किस ओर झुकूँ

हम ऊँचे मकामों की ओर निकले हैं
ज़माना उल्टा है, तबीअत आवारा है

इस के उलटने से ताज तोड़े जाते हैं
इसने नदियों को समुद्र का विस्तार दिया है

इसकी संस्कृति की गर्द ही गर्द होगी
यदि इसे पुरानी वेष-भूषा में रहना पसन्द हो

तो जहाँ गिरेवान होना चाहिए वहाँ दामन होता है
यह उलट-पुलट ज़माना……

* * *

आज का आज नया नहीं है
कल की अविश्वसनीय घड़ी

कल जिस पथ पर कोसों चले
वह आज सड़क चूर चूर हो गई है, छोटी पगडंडी बनी है

सीधा टेढ़ा बनता है, टेढ़ा विस्तार पाता है
प्रकाश की एक झाँकी देखते ही बंद होती है

काले कोठों में कायरू की जड़ सुलगती रहती है
दृष्टि का विस्तार आकाश के समान हुआ है

मैं राख का एक कण हूँ ......
बेचारे मानव

जहाँ पैर रखते हैं मिट्टी खिसक जाती है
यह आलम और इसका परिवेश

यहाँ "निज़ाम शम्सी" नित्य नया उत्पन्न होता है
पुस्तकें पुरानी पड़ी हैं

होठों से निकली बात बासी हो जाती है
जिसने कल्पनाओं के जनाजे निकले देखे

वह कौन से प्यारे बुत गढ़ सकता है ?
समय पारे के मिज़ाज सा हो गया है

यहाँ तक कि मैं भी वह नहीं हूँ
जो मैं कल शाम को था

यह क्षण भी मेहमान है, यह भी अभी निकलेगा
कुछ समय के बाद नया अजूबा होगा
मुझे समझ में नहीं आता मैं भटक गया हूँ ।

सजूद सेलानी

गज़ल

फिक्रें व गर्दिशें न सम, ग़म ग़म सा नहीं है
तक़दीर जुल्फेयार सम खमदार रही है ।

जिस ग्रोर हवा का हो रुख उस ग्रोर बहे लोग
इंसान सादा नाव के सिरे की तरह हैं ।

मेरे जिगर का दाग़ ताज़ा है उसी तरह
जैसे कि मैंहदी वाले नाखूनों की ग्राब है ।

जिसको भी मैंने देखा वह गर्दिश में घिरा है
हर एक खड़ा तार के खम्बे की तरह है ।

ज़ख्मों को करे ठीक किसे दर्द सुनाऊँ
ग्रापस में पीछा करने की लत बुरी तरह है

बारिश कभी ज़िन्दगी फिर धूप है कभी
जिसके है पास धन यहाँ दम उसका दम ही है ।

उसका हृदय ही शौक़ में धुक् धुक् ग्रधिक करे
इस सुर ग्रौर ताल जैसा कोई साज़ नहीं है ।

ग्राजकल गले "सजूद" के उतरे न कोई बात
तेरा ही ग़म जमशेद के प्याले की तरह है ।।

परिशिष्ट

शब्द	अर्थ	पृष्ठ
नीलनाग	... यूसमर्ग स्थान से थोडी दूर पर एक छोटी सी झील जो कष्यप ऋषि के पुत्र नील ऋषि के नाम पर है। यहीं पर नीलमत पुराण की रचना नील ऋषि ने की।	१८
चरार	... चरार शरीफ शेखनूरउद्दीन (नुन्दऋषि) का मजार है।	१८
दस्तगीरी	... मददगीरी, श्रीनगर में पीर दस्तगीर का मजार है।	२३
हारुन रशीद	... मिस्र का बादशाह।	२४
बसरा	... प्रसिद्ध नगर	२४
ताजदार	... युवराज	२४
डूरू वेरीनाग	... वेरीनाग में जहाँगीर का उद्यान है। यहाँ प्रसिद्ध चश्मा है जो झेलम का उद्गम-स्रोत है।	२६
आरवल	... जंगली गुलाब।	३८
कलमा	... इस्लाम धर्म में कलमा पर ईमान लाने वाला मुसलमान कहलाता है।	३३
कमख्वाब	... जरी का बहुमूल्य वस्त्र।	३४
शिकबा	... उपालम्भ।	३७
पशेमानी	... पश्चाताप।	३८
शालमार	... मुगल उद्यान।	४०
मानसबल	... कश्मीर की एक झील	४१

नवरोज	... शिया मुसलमानों का त्योहार	४५
बेदार	... सचेतन	४६
गुलज़ार	... चमन।	४६
सफेदे, बेदजार, सर्वेरवाँ	... वृक्षों के नाम।	५४
निज़ाम	... व्यवस्था।	५८
संगरमाल	... उदा	६१
खमदार	... लचकीली।	७२



Price Rs. 5.25

A Publication of

J & K CULTURAL ACADEMY, JAMMU.

BROCA'S ARTISTIC PRESS ... P-KASHMIR.